जुलाई 2010

दादावाणी

मूल्य रु. १०

न देखें किसी को दोषी,
वे दादा पूर्ण ज्ञानी अभय...

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष : ५, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ५७
जुलाई २०१०

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९) ३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
hindi.dadabhagwan.org

Printed, Published & Owned by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल का

भारत :		८०० रुपये
यु.एस.ए. :		१५० डॉलर
यु.के. :		१०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत :		१०० रुपये
यु.एस.ए. :		१५ डॉलर
यु.के. :		१० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से भेजे।

दादावाणी

कौन-सी दृष्टि से ज्ञानी ने देखा जगत् निर्दोष ?

संपादकीय

संयोग और आत्मा दो ही वस्तुएँ हैं। यदि खुद आत्मभाव में रहे तो फिर रहा क्या? संयोगों ही न? और संयोग तो पर और पराधीन हैं, निकाली हैं, डिस्चार्ज हैं। लेकिन बहुत सारे संयोगों में बुद्धि की प्राधान्य की वजह से ये हक़ीक़त विस्मृत हो जाती है। जिसके परिणाम से सर्जित होती है प्रश्नों की परंपरा, कि मेरे जीवन में ऐसा किस वजह से हुआ? क्यों हुआ? मेरा कोई गुनाह नहीं है, दोष नहीं है, मैं निर्दोष हूँ फिर भी लक्ष्मी, सत्ता या फिर बुद्धि के ज़ोर पर दूसरे व्यक्ति..... मेरे साथ ऐसा व्यवहार किस लिए करते हैं? ऐसे, जीवन में अनेक व्यवहारिक या व्यक्तिगत प्रश्न उद्‌भव होते हैं और सच्ची बात समझ में नहीं आने के कारण समाधान होता नहीं है इसलिए दूसरों को गुनहगार देखता है। खुद के अहंकार और बुद्धि को प्राधान्य देकर दूसरे पर दोषारोपण करके आख़िर में तो अहंकार को ही पोषण देता है। और इसके बावजूद भी अंदर की जलन बंद होती ही नहीं है। और कषायों का दबाव अनुभव करके, अभिप्रायों में उलझकर जीवन में से सच्चे आनंद की अनुभूति से अलिप्त रह जाता है।

प्रतिकूल संयोग तो हर एक के जीवन में आते ही हैं। महावीर भगवान ने कान में नरकट ठोकनेवाले को भी निर्दोष देखा। तो भगवान के पास ऐसी कैसी दृष्टि होगी जिसकी वजह से भयंकर द्वेष हो सके वैसे प्रसंग में वीतराग रह सके होंगे? भगवान के पास ज्ञान (तत्व) दृष्टि थी और उस ज्ञान के आधार पर भगवान सार निकाल सके कि यह संयोग मेरे ही कर्म का उदय है, सामनेवाला व्यक्ति शुद्धात्मा है, पुद्‌गल-पुद्‌गल का हिसाब चुकता हो रहा है, जो यह कर्म कर रहा है वह खुद उसका कर्त्ता नहीं है लेकिन निमित्त मात्र है, मेरे ही कर्म के उदय से यह संयोग आया हुआ है और इस उदय का मुझे समभाव से निकाल करना है। कैसी अद्‌भुत निर्दोष दृष्टि कहलाती है?

भगवान का ज्ञान यही कहता है कि यह जगत् अपना ही प्रोजेक्शन है। अपने ही कॉज़ का इफेक्ट सामनेवाले व्यक्ति के द्वारा उदय में आ रहा है, उसमें वह व्यक्ति क्या करे? ऐसा नहीं हो सकता कि उस व्यक्ति की इच्छा नहीं हो फिर भी उसे जबरदस्ती वैसा व्यवहार करना पड़ता हो? तो फिर वैसी निर्दोष व्यक्ति को दोषित देखकर या दोषित ठहराकर हम क्या सुख पा सकते है? बुद्धि हमेशा दूसरे को दोषित ठहराती है लेकिन ज्ञान तो निर्दोष ही ठहराता है कि अपनी ही भूलों का दंड है। यदि मोक्ष में जाना हो, जगत् से छूटना हो, तो बुद्धि का नहीं सुनकर प्रज्ञा का कहा सुनकर, अभिप्रायों से मुक्त रहकर, अपमानकर्त्ता को उपकारी मानकर, निर्दोष दृष्टि विकसित करनी ही पड़ेगी!

ऐसी निर्दोष दृष्टि किस तरह विकसित की जाए उसके प्रमाण (समझने के लिए नंबर देकर अन्डरलाइन किया है) आत्मविज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान की ज्ञानवाणी में से उपलब्ध होते हैं। उसका गहराई से तत्व दृष्टि से अध्ययन करेंगे तो ज़रूर निर्दोष दृष्टि विकसित करके प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ने में हमें सहायक होंगे ही!

दीपक देसाई ....

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

कौन-सी दृष्टि से ज्ञानी ने देखा जगत् निर्दोष ?

भगवान ने देखा जग निर्दोष

प्रश्नकर्ता : भगवान महावीर ने सारे जगत् को कौन-सी दृष्टि से निर्दोष देखा?

दादाश्री : भगवान ने निर्दोष देखा, और खुद की निर्दोष दृष्टि से निर्दोष देखा। उन्हें कोई दोषित नहीं लगा। ऐसा मैंने भी निर्दोष देखा है और मुझे भी कोई दोषित दिखता नहीं है। [१] फूलहार चढ़ाए तो भी कोई दोषित नहीं है और गालियाँ दें तो भी कोई दोषित नहीं है। यह तो [२] मायावी दृष्टि की वजह से सब दोषित दिखते हैं। इसमें सिर्फ दृष्टि का ही दोष है।

प्रश्नकर्ता : वैसी आपके जैसी निर्दोषता किस तरह प्राप्त हो सकती है?

दादाश्री : सारे जगत् को निर्दोष देखें, तब! मैंने सारे जगत् को निर्दोष देखा है, तब मैं निर्दोष हुआ हूँ। [३] हित करनेवाले को और अहित करनेवाले को भी हम निर्दोष देखते हैं।

[४] जगत् में कोई दोषित नहीं है। [५] दोष उसने किया हो, तो भी वास्तव में उसने अपने पिछले अवतार में किया होता है। लेकिन बाद में तो [६] उसकी इच्छा नहीं हो फिर भी अभी हो जाता है। अभी उसकी इच्छा के बगैर हो जाता है न? [७] भरा हुआ माल है। इसलिए उसमें उसका दोष नहीं है न! इसलिए निर्दोष माना है।

जगत् निर्दोष, प्रमाण सहित

हम, जगत् सारा निर्दोष देखते हैं। हमने, जगत् निर्दोष माना हुआ है। वह, [१] माना हुआ थोड़े ही बदल जानेवाला है? घड़ी में बदल जाता है? [२] हमने निर्दोष माना हुआ है, जाना हुआ है, वह थोड़े ही दोषित लगेगा?

क्योंकि [३] जगत् में कोई दोषित है ही नहीं। मैं एक्ज़ेक्टली (जैसा है वैसा) कह देता हूँ। बुद्धि से प्रूफ (प्रमाण) देने के लिए तैयार हूँ। इस बुद्धिशाली जगत् को, यह जो बुद्धि का फैलाव हो गया है, उनको प्रूफ चाहिए तो मैं देना चाहता हूँ।

मैं लोगों को प्रमाण देने के लिए तैयार हूँ। मैं प्रमाण सौ प्रतिशत देने को तैयार हूँ। वह खुद ही कहेगा की, 'कम्पलीट प्रमाण है यह!'

निर्दोष दृष्टि वहाँ जगत् निर्दोष

हमें सब निर्दोष ही दिखते हैं। क्योंकि हम खुद निर्दोष दृष्टि करके सारे जगत् को निर्दोष देखते हैं। [१] तात्विक दृष्टि से देखें तो दोष किसीका भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'रिलेटीव' तो स्पष्ट दोषित दिखता है न?

दादाश्री : [२] दोषित कब माना जाए? उसका शुद्धात्मा ऐसा करता हो तब। लेकिन [३] शुद्धात्मा तो अकर्त्ता है। वह कुछ भी कर सके वैसा नहीं है। [४] यह तो 'डिस्चार्ज' होता है, उसमें तू उसको दोषित मानता है। [५] जब तक जगत् में कोई भी जीव दोषित दिखता है तब तक समझना कि अंदर शुद्धिकरण

हुआ नहीं है, तब तक इन्द्रियज्ञान है।

एक रकम आप मानोगे?

स्कूल में पढ़ते समय एरिथमेटिक (अंकगणित) में सिखाते हैं न मास्तरजी, कि कुछ नहीं आए तो सपोज़ (मानो कि) १०० ऐसा कहते हैं न? नहीं कहते, १०० मानो तो जवाब आएगा। तब फिर हमारे मन में ऐसा होता है कि मास्तर ने १०० पर कोई जादू किया लगता है। तो हम कहे कि नहीं, मैं तो सवा सौ मानूँगा। तब कहे, तुझे मानना हो तो मान न! ऐसे मानने से जवाब मिले ऐसा है।

ऐसी एक रकम मैं मानने को कहूँ आपसे? इस जगत् में कोई दोषित ही नहीं है। सारा जगत् निर्दोष है। आपको दोष दिखता है?

प्रश्नकर्ता : देखें तो दिखता है।

दादाश्री : [१] वास्तव में दोष है नहीं। फिर भी दोष दिखता है, वही हमारी नासमझी है। लोगों के किंचित् मात्र दोष दिखते हैं, वह हमारी नासमझी है।

यह रकम मानें और उस रकम को मानकर जवाब लाएँ तो जवाब आ जाए ऐसा है। [२] कोई दोषित है ही नहीं जगत् में। [३] आपके दोष से ही आपको बंधन है। [४] दूसरे किसीका दोष है ही नहीं। [५] कोई आपका नुकसान करे, कोई गालियाँ दें, इन्सल्ट (अपमान) करे तो उसका दोष नहीं है, दोष आपका ही है।

विज्ञान, कॉज़-इफेक्ट का

ये मन-वचन-काया इफेक्टिव हैं या अन्-इफेक्टिव? इफेक्टिव हैं। जन्म से ही इफेक्टिव हैं। इफेक्ट है तो कॉज़ अवश्य होने ही चाहिए। कॉज़ेज़ हैं तो इफेक्ट हैं और इफेक्ट हैं तो कॉज़ेज़ होने ही चाहिए। ऐसे, [१] कॉज़ेज़ और इफेक्ट, इफेक्ट और कॉज़ेज़ की घटमाल (परंपरा) चलती ही रहती है।

[२] जैसे कॉज़ेज़ उत्पन्न किए हों वैसे ही इफेक्ट्स आते हैं। अच्छे को अच्छे और बुरे को बुरे। लेकिन ठेठ तक छूट ही नहीं सकते। [३] वह तो कॉज़ेज़ होने रुकें तो ही इफेक्ट्स बंद होते हैं। लेकिन जब तक 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा आपकी बिलीफ़ में है, ज्ञान में भी 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा है, तब तक कॉज़ेज़ बंद होते ही नहीं। वह तो ज्ञानी पुरुष ज़ोर से हिलाकर जगाएँ और स्वरूप का भान करवाएँ तब कॉज़ेज़ होने बंद होते हैं। हम कारण शरीर का नाश कर देते हैं। फिर इस चंदूलाल को जितने इफेक्ट्स हैं उनका निकाल कर देना है। फिर उन इफेक्ट्स का निकाल करते हुए भी आपको राग-द्वेष नहीं होते और इसलिए नये बीज पड़ते ही नहीं। हाँ, [४] इफेक्ट्स तो भुगतने ही पड़ते हैं। [५] इफेक्ट्स तो इस जगत् में कोई बदल सके ऐसा है ही नहीं! यह कम्पलीट साइन्टिफिक वस्तु है। बड़े से बड़े साइन्टिस्ट को भी मेरी बात क़बूल करनी ही पड़ती है।

संयोग, पर और पराधीन

[१] 'स्थूल संयोग, सूक्ष्म संयोग और वाणी के संयोग, पर हैं और पराधीन हैं।' [२] इतना ही वाक्य खुद की समझ में रहता हो, खुद की जागृति में रहता हो तो सामनेवाला मनुष्य चाहे जो बोले तो भी हमें ज़रा-सा भी असर नहीं होता, और यह वाक्य कल्पित नहीं है। जो 'एक्ज़ेक्ट' है, वह कहता हूँ। मैं आपको ऐसा नहीं कहता की मेरे शब्दों का मान रखकर चलो। 'एक्ज़ेक्ट' ऐसा ही है। [३] हक़ीक़त आपके समझ में नहीं आने से आप मार खाते हो।

एडजस्टमेन्ट, जड़ भावों के साथ

प्रश्नकर्ता : अंदर के जड़ भाव ऐसे हैं न कि सामनेवाले को दोषित दिखलाते हैं।

दादाश्री : [१] हम दोषित कहें तो, हमारी इच्छा में दोषित हैं ऐसा लगता है तब वे घेर लेते हैं। नहीं तो [२] हम कहें, 'नहीं, वे तो बहुत अच्छे मनुष्य हैं', फिर वे बंद हो जाते हैं।

नहीं हो दु:ख किसीको

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के तौर पर हमारा धर्म क्या है?

दादाश्री : किस तरह [१] इस जगत् में हमारे मन-वचन-काया लोगों के काम आए वह हमारा धर्म है। लोगों के लिए फेरे लगाकर (मददरूप होकर), वाणी से किसीको अच्छी समझ दें, बुद्धि से समझाएँ, किसीको दु:ख नहीं हो ऐसा हम भाव रखें, वह अपना धर्म है। किसी जीव को दु:ख नहीं हो, उसमें हर एक जीव के लिए सौगंध नहीं ली जाए तो केवल मनुष्य की ऐसी सौगंध लेनी चाहिए। और मनुष्य की सौगंध ली हो तो सारे जीवों के लिए सौगंध लेनी चाहिए कि [२] इन मन-वचन-काया से किसी जीव को दु:ख नहीं हो। इतना ही धर्म समझना है!

सच्ची कमाई कौन-सी?

इस जगत् में किसी भी जीव को किंचित् मात्र दु:ख नहीं देने की भावना हो तो ही कमाई कहलाती है। ऐसी भावना रोज़ करनी चाहिए। [१] कोई गाली दे वह हमें पसंद नहीं हो फिर भी उसे जमा ही करना चाहिए, [२] तहक़ीक़ात मत करना कि मैंने उसे कब दी थी। [३] हमें तो तुरन्त जमा कर लेना चाहिए कि हिसाब खतम हो गया। और [४] चार वापस दीं तो बहीखाता चलता रहता है, उसे ऋणानुबंध कहते हैं। बही बंद कर दी इसलिए खाता बंद। लोग तो क्या करते हैं कि सामनेवाले ने एक दी हो तो ये ऊपर से चार देते हैं! भगवान ने क्या कहा है कि, [५] जो रकम तुझे पसंद हो वह उधार दे और नहीं पसंद हो तो मत देना। कोई मनुष्य कहे कि, 'आप बहुत अच्छे हो।' तो हम भी कहें कि, 'भाई, आप भी बहुत अच्छे हो।' ऐसी पसंदीदा बात उधार दी तो चलता है।

नहीं जा सकते मोक्ष में दु:ख देकर

प्रश्नकर्ता : आपका ज्ञान लेने के बाद ऐसा होता है कि गंगा का जैसे पवित्र झरना बह जाता है, वैसे हमें भी बह जाना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, बह जाना चाहिए। किसीको असर नहीं हो, किसीको भी दु:ख नहीं हो उस तरह। [१] किसीको भी दु:ख देकर हम मोक्ष में जाएँ, ऐसा होगा नहीं। [२] किसीको दु:ख हुआ, इसलिए हम बहते हों वहाँ से वह रस्सा डालकर पकड़ेगा कि खड़े रहो, और सबको सुख देंगे तो सब जाने देंगे। पान खिलाएँ तो भी जाने देंगे, बीड़ी दोगे तो भी, अंत में लौंग का दाना दोगे तो भी जाने देंगे। लोग आशा रखते हैं कि कुछ मिलेगा। लोग आशा नहीं रखें तो आप महेरबान किस बात के? [३] मोक्ष में जानेवाले महेरबान कहलाते हैं। इसलिए मेहरबानी दिखाते-दिखाते हमें जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लोगों को आशा होती है, लेकिन हमें आशा रखने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : [४] हमें आशा नहीं रखनी चाहिए। यह तो उन्हें पान-सुपारी या कुछ देकर चलने लगना। वर्ना ये लोग तो उल्टा बोलकर रोकेंगे। इसलिए [५] हमें अटा-पटाकर काम निकाल लेना चाहिए। लोग मोक्ष में ऐसे ही नहीं जाने देंगे। लोग तो कहेंगे, 'यहाँ क्या दु:ख है कि वहाँ चले? यहाँ हमारे साथ मज़े करो न?'

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम लोगों की सुनें तब न?

दादाश्री : सुनेंगे नहीं फिर भी वे उल्टा करेंगे। उनकी चारों दिशाएँ खुली हैं और आपकी एक दिशा खुली है। इसलिए उन्हें क्या? वे उल्टा कर सकते हैं और आपको उल्टा नहीं करना चाहिए।

[६] सबको राज़ी रखना है। राज़ी करके चलने लगना है। हमारे सामने ताककर देखता हो वहाँ उसे, 'कैसे हो साहब?' कहा, तो वह चलने देगा और ताककर देख रहा हो और हम कुछ भी नहीं बोलें, तब वह मन में कहेगा कि ये तो बहुत 'अकड़'वाला

है! इसलिए फिर तूफ़ान मचाएगा!

प्रश्नकर्ता : हम सामनेवाले को राज़ी करने जाएँ तो हमारे में राग नहीं घुस जाएगा?

दादाश्री : उस तरह राज़ी नहीं करना है। ये पुलिसवालों को किस तरह राज़ी रखते हो? पुलिसवाले पर राग होता है आपको?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : राज़ी, वह भी सबको रखने की ज़रूरत नहीं है। [७] हमारे रास्ते पर कोई बीच में आए तब उसे समझा-बूझाकर काम निकाल लेना है। इन्हें तो बीच में आने में देर नहीं लगती। [८] उनका किसीका हमें धक्का लग जाए, तो सामने फरियाद करने मत जाना, लेकिन समझा-बूझाकर काम निकाल लेने जैसा है।

उपाय में उपयोग क्यों?

[१] इस जगत् में कोई ऐसा जन्मा ही नहीं है कि जो आपका नाम दे! [२] और नाम देनेवाला होगा, उसके आप लाखों उपाय करेंगे तो भी आपका कुछ होनेवाला नहीं है। इसलिए किस तरफ़ जाना है? लाखों उपाय करने में पड़ा रहना है? नहीं, कुछ नहीं होगा। इसलिए [३] सब काम छोड़कर आत्मा की तरफ़ जाओ।

छेड़ने में जोखिम कितना?

[१] यह जगत् अपना प्रोजेक्शन है, उसमें किसी और की जवाबदारी नहीं है। भगवान यदि ऊपरी होते न तब तो हम जानें कि हम पाप करेंगे और भगवान की भक्ति करेंगे तो धुल जाएँगे, लेकिन ऐसा नहीं है। यह तो जिम्मेदारी हमारी ही है। [२] किंचित् मात्र एक विचार उल्टा आया उसकी जिम्मेदारी हमारी ही है। होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल हम ही हैं। ऊपर कोई बाप भी नहीं है। [३] आपका कोई ऊपरी ही नहीं है, जो हो वह आप ही हो।

[४] सिर्फ व्यक्ति के रूप से सब अलग हैं, लेकिन हैं आत्मा ही, इसलिए वे भी भगवान ही हैं। इसलिए किसीका नाम मत देना और किसीको छेड़ना मत। हेल्प हो सके तो करना और नहीं हो सके तो कोई बात नहीं, लेकिन छेड़ना तो नाम मात्र को भी नहीं। लोग बाघ को नहीं छेड़ते, साँप को नहीं छेड़ते और मनुष्यों को ही छेड़ते हैं, उसका क्या कारण है? बाघ या साँप से तो मर जाएँगे, और मनुष्य तो ज़्यादा से ज़्यादा लकड़ी से मारेगा या दूसरा कुछ करेगा। इसलिए मनुष्यों को छेड़ते हैं न! [५] किसीको भी नहीं छेड़ना चाहिए, क्योंकि भीतर परमात्मा बैठा हुआ है। आपकी समझ में आती है यह बात? आपने किसीको छेड़ा था क्या?

प्रश्नकर्ता : खुद के मातहत हो उसे मनुष्य छेड़ता है।

दादाश्री : [६] मातहत को जब तक आपको कहने की आदत है, झिड़काने की आदत है, तब तक आपको कोई झिड़कनेवाला मिल जाएगा। मैं किसीको भी झिड़कता नहीं हूँ, इसलिए मुझे कोई झिड़कता नहीं है। अपने हाथ नीचेवाले झिड़कने के लिए नहीं हैं, उसे संतोष हो उस प्रकार हमें अपना काम निकाल लेना चाहिए। इस बैल को रोज़ दस रुपये का खिलाते हैं और तीस रुपये का काम निकलवा लेते हैं। उसी प्रकार हमारे यहाँ मज़दूर काम करते हों, तो उन बेचारों को फ़ायदा हो तो ही अपने वहाँ वे रहेंगे न? लेकिन हम उन्हें झिड़कते रहें तो वे कहाँ जाएँ? [७] जीव मात्र में भगवान रहे हुए हैं, लेकिन मनुष्यों में तो भगवान व्यक्त रूप में हुए हैं, ईश्वर स्वरूप में हुए हैं, भले ही परमेश्वर नहीं हुए हैं। ईश्वर क्यों कहलाते हैं? कि वह मन में पक्का करे न कि इन्हें एक दिन गोली से मार देना है, तो एक दिन गोली मारकर मार देता है न? ऐसे यह ईश्वर स्वरूप हैं, इसलिए इनका नाम ही नहीं देना चाहिए। इसलिए हम कहते हैं न, कि इस काल में एडजस्ट

एवरीव्हेर हो जाओ। कहीं भी डिसएडजस्ट होने जैसा नहीं है, यहाँ से तो खिसककर भाग जाने जैसा है। 'यह' विज्ञान तो एक-दो अवतार में मोक्ष में ले जानेवाला है, इसलिए यहाँ काम निकाल लेना है।

अपने ही गुनाहों के दंड

जगत् हमें किस तरह रोकेगा? [१] हमारे छुपे हुए गुनाह हैं इसलिए। मेरे छुपे हुए गुनाह नहीं हैं तो मुझे कोई रोकता भी नहीं है। [२] 'मुझे क्यों रोका?' ऐसा कहा इसलिए फिर आगे का कुछ दिखाई नहीं देता।

[३] इसलिए, लोग हमारा आईना है, खुद का प्रतिबिंब देखने का साधन। [४] इस भाई को मुझसे कोई भी दु:ख हो तो जानना कि मेरी भूल हुई है, इसलिए मैं भूल सुधारे बगैर नहीं रहता। कुछ व्यवहारिक भूल हुई हो तो सुधारनी तो पड़ेगी न? लेकिन उसमें करने का कुछ होता नहीं है, लेकिन जानने का ही होता है। जो ज्ञान क्रिया में आए वही ज्ञान सच्चा। क्रिया में नहीं आए तो जानना कि यह ज्ञान गलत है।

अपने ही लेखे-जोखे

[१] इस जगत् में कुछ गलत है ही नहीं। [२] आपको जो कुछ भी कोई मनुष्य देता है, आपका ही उधार दिया हुआ वापस देता है। [३] उधार दिए बगैर तो कोई मनुष्य हमारे यहाँ जमा करवाने आएगा ही नहीं न! [४] आपने उधार दिया होगा उतना ही वापस आता है, लेकिन कब उधार दिया था उसका आपको पता नहीं है इसलिए आप आज की बही में देखते हो कि इसमें कुछ उधार दिया हुआ लगता नहीं है, इसलिए आपको ऐसा लगता है कि यह नया देने आया है। वास्तव में तो [५] नया कभी भी कोई देने आता ही नहीं। सारा उधार पिछला ही है, वह आपको जल्दी से जमा कर लेना चाहिए। अब वापस हम देंगे तो व्यापार चलता रहेगा।

[६] पिछले जन्म में किसीको दो गालियाँ दी हो तो इस जन्म में आपको कोई दो गालियाँ दे, उस घड़ी आपको फिर कड़वा लगता है इसलिए आप फिर पाँच गालियाँ देते हो। दो गालियाँ वापस आई तब कड़वा लगता है तो पाँच गालियाँ वापस आएँगी तब क्या हालत होगी? इसलिए हमें नया उधार देना बंद कर देना चाहिए। जिस व्यापार में नुकसान गया और दु:ख लगता है, उस व्यापार में उधार देना बंद कर दो। [७] हमें कोई दो सुनाएँ, तब हमें भीतर अंदर से शांतिपूर्वक उसे जमा कर लेना चाहिए, क्योंकि दिया हुआ है वह वापस आया है, इसलिए अभी जमा कर लो और वापस फिर देना मत। इसलिए इस दुनिया में जो सब मिलता है, वह सब दिया हुआ है वही वापस आता है, ऐसा समझ में आए तो पहली हल हो जाएगी या नहीं होगी? इसलिए हमें यहाँ-वहाँ से यह उलझन सुलझानी है!

स्वरूप, सांसारिक संबंधो का

[१] खुद परमानन्ट (स्थाई) और यह सारा टेम्पररी (विनाशी), किस तरह मेल बैठे? इसलिए ही यह सारा जगत् मुश्किल में फँसा है! [२] इस रिलेशन (संबंधो) में तो रिलेशन के आधार पर ही बरतना चाहिए। ज़्यादा सत्य-असत्य की ज़िद नहीं पकड़नी चाहिए। ज़्यादा खींचने से टूट जाता है। [३] सामनेवाला संबंध तोड़े तो, यदि हमें संबंध की ज़रूरत हो तो जोड़ लें तो ही संबंध टिकता है। क्योंकि ये सारे संबंध रिलेटिव हैं। उदाहरण के तौर पर पत्नी कहे कि आज पूनम है, आप कहो कि अमावस्या है तो दोनों की खींचातानी चलती है और सारी रात बिगड़ती है और सुबह पत्नी चाय का प्याला पटककर देती है, तांता रहता है। उसके बजाय [४] हम समझ जाएँ कि इसने खींचना शुरू किया है तो टूट जाएगा इसलिए धीरे से पंचांग इधर-उधर करके फिर कहें, [५] 'हाँ, तुम्हारी बात सही है, आज पूनम है।' ऐसे ज़रा नाटक करने के बाद ही उसका सही करवाएँ, नहीं तो क्या होगा? ज़्यादा डोरी खींची हुई हो और एकदम से आप छोड़ दो तो वह गिर

जाएगी, इसलिए [६] डोरी को धीरे-धीरे सामनेवाला गिरे नहीं ऐसे सँभालकर छोड़ना चाहिए, वर्ना वह गिरे उसका दोष लगता है।

अहंकार के प्रतिघोष, व्यवहार में

[१] अहंकार अंधा बनवानेवाला है। जितना अहंकार ज़्यादा उतना अंधा ज़्यादा।

प्रश्नकर्ता : कार्य करने के लिए तो अहंकार की ज़रूरत पड़ेगी ही न?

दादाश्री : नहीं, वह निर्जीव अहंकार अलग है। उसे अहंकार कहा ही नहीं जा सकता न? उसे लोग भी अहंकारी नहीं कहते।

प्रश्नकर्ता : तो कौन-सा अहंकार नुकसानकर्त्ता है?

दादाश्री : यह तो आप सब जानते हो कि 'मैं ज्ञानी हूँ।' लेकिन बाहर व्यवहार में लोग थोड़े ही जानते हैं कि, 'मैं ज्ञानी हूँ।' फिर भी मुझमें लोग एक भी ऐसा नहीं देखेंगे कि जिसकी वजह से लोग मुझे अहंकारी कहे। जब कि आपको ऐसा कहेंगे। [२] इस अहंकार ने ही तबाही मचाई है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस अहंकार से सारा व्यवहार चलता है न?

दादाश्री : अहंकार से व्यवहार नहीं चलता। [३] अहंकार सीमा से बाहर नहीं जाना चाहिए, वर्ना वह नुकसान करता है।

प्रश्नकर्ता : लोगों को हमारे पुराने अहंकार के प्रतिघोष पड़ गए हैं। उस वजह से हमें अहंकारी ही देखते हैं।

दादाश्री : [४] आपके पुराने अहंकार के प्रतिघोष जब तक नहीं मिटते, तब तक आपको राह देखनी पड़ेगी। [५] पोलम्पोल चले ऐसा नहीं है।

एक अच्छे आबरूदार घर का लड़का था। लेकिन उसे चोरी की बुरी आदत पड़ गई थी। उसने चोरी बंद कर दी। फिर मेरे पास आकर उसने कहा, 'दादा, अभी भी लोग मुझे चोर कहते हैं।' तब मैंने उससे कहा, "तू [६] दस साल से चोरी कर रहा था, तो भी लोगों ने तुझे पहचाना नहीं, तब तक तुझे लोग साहूकार कहते थे। अब तू चोर नहीं है। साहूकार होगा फिर भी दस साल तक चोर का पिछला प्रतिघोष पड़ता रहेगा। इसलिए तू दस साल तक सहन करना। लेकिन अब तू वापस चोरी मत करने लगना। क्योंकि मन में ऐसा लगता है कि, 'वैसे भी मुझे लोग चोर कहते ही हैं, इसलिए चोरी ही करो न!' ऐसा मत करना।"

परिणाम परसत्ता में

प्रश्नकर्ता : गलत करनेवाले को सब पता चल जाता है, फिर भी गलत क्यों करता है?

दादाश्री : [१] गलत होता है, वह तो परपरिणाम है। हम [२] यह 'बॉल' यहाँ से डालें, फिर हम उससे कहें कि 'अब तू यहाँ से दूर मत जाना, डाला वहीं पड़े रहना।' ऐसा होता है? नहीं होता। डालने के बाद 'बॉल' परपरिणाम में जाता है। इसलिए जिस तरह किए होंगे, यानी तीन फ़ुट की ऊँचाई से डाला हो तो परिणाम दो फ़ुट के आते हैं। दस फ़ुट के परिणाम सात फ़ुट आते हैं। लेकिन वे [३] परिणाम अपने आप बंद ही हो जानेवाले हैं, हम यदि वापस उसमें हाथ नहीं डालें तो!

प्रश्नकर्ता : उस वक्त ऐसा कहा जा सकता है कि परापूर्व से गलत करता आया है, इसलिए गलत में खिंचता रहता है?

दादाश्री : ऐसा कुछ नहीं है। यह [४] सब 'व्यवस्थित' के ताबे में है। इसलिए उसमें उसका दोष नहीं है।

अहंकार का समाधान क्यों?

[१] यह रूपक जो दिखता है वह संसार नहीं है।

२ अहंकार ही संसार है, तो वैसे संसार में कुछ न भी सँभल सके तो भी क्या हर्ज है? एक मनुष्य ने हमें पाँच सौ रुपये का दगा दिया हो, तो वह वापस देने के समय पर ३ हमारे अहंकार का समाधान नहीं करे इसलिए रुपये वापस लेने के लिए हम उस पर केस करके हंगामा कर देते हैं, लेकिन फिर यदि वह आकर हमारे पैरों में पड़े, रोए, उससे हमारे अहंकार को संतोष होता है। इसलिए हम उसे जाने देते हैं!

कर्मफल - लोकभाषा में, ज्ञानी की भाषा में

१ पिछले अवतार में कर्म अहंकार का, मान का बँधा हुआ होता है, तो इस अवतार में उसके सारे बिल्डिंग बन रहे हों, तो फिर वह उसमें मानी होता है। किस वजह से मानी होता है? २ कर्म के हिसाब से वह मानी होता है। अब मानी हुआ, उसे जगत् के लोग क्या कहते है कि, 'यह कर्म बाँधता है, यह ऐसा मान लेकर घूम रहा है।' जगत् के लोग इसे कर्म कहते हैं। जब कि ३ भगवान की भाषा में यह कर्म का फल आया। फल अर्थात् मान नहीं करना हो तो भी करना ही पड़ता है, हो ही जाता है।

और ४ जगत् के लोग जिसे कहते हैं कि यह क्रोध करता है, मान करता है, अहंकार करता है, अब उसका फल यहीं का यहीं ही भुगतना पड़ता है। ५ मान का फल यहीं का यहीं क्या आता है कि अपकीर्ति फैलती है, अपयश फैलता है। वह यहाँ ही भुगतना पड़ता है। मान करें, उस समय यदि मन में ऐसा हो कि यह गलत हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें निर्मानी होने की ज़रूरत है, ऐसे भाव हों तो वह नया कर्म बाँधता है। उस कारण से अगले भव में फिर निर्मानी होता है।

कर्म की थियरी ऐसी है! ६ गलत करते समय अंदर भाव परिवर्तित हो जाएँ तो नया कर्म वैसा बँधता है। ७ और गलत करे और ऊपर से खुश हो कि 'ऐसा करने जैसा ही है।' तो फिर नया कर्म मज़बूत हो जाता है, निकाचित हो जाता है। उसे फिर भुगतना ही पड़ता है।

भेदबुद्धि वहाँ मतभेद

आज के जगत् में तीन मनुष्य घर में होते हैं लेकिन शाम होते तैंतीस मतभेद पड़ते हैं वहाँ हल कैसे आए? १ जहाँ भेदबुद्धि है वहाँ मतभेद अवश्य होने ही वाले हैं। २ ज्ञान किसीकी भी भूल नहीं निकालता। बुद्धि सबकी भूल निकालती है। बुद्धि तो सगे भाई की भी भूल निकालती है और ज्ञान तो 'सौतेली माँ' की भी भूल नहीं निकालता। सौतेली माँ हो, वह लड़का खाने बैठा हो तो नीचे से जली हुई खिचड़ी की खुरचन रखती है, तब बुद्धि खड़ी होती है। वह कहती है कि यह सौतेली माँ ही खराब है। वह फिर निरी जलन ही करवाती है। लेकिन यदि लड़के को ३ ज्ञान मिला हो तो तुरन्त ही ज्ञान हाज़िर होता है और कहता है, 'अरे, वह शुद्धात्मा और मैं भी शुद्धात्मा हूँ। और ४ यह तो पुद्गल की बाज़ी है, उसका निकाल हो रहा है।'

अपने ही परिणाम वहाँ दोषित कौन?

१ किंचित् मात्र आपको कोई कुछ कर सके ऐसा है ही नहीं, यदि आप किसीको नहीं छेड़ो तो। उसकी मैं आपको गारंटी लिख देता हूँ। २ यहाँ केवल साँप पड़े हों, फिर भी कोई आपको छूए नहीं ऐसा गारंटीवाला जगत् है। ३ आपने छेड़ना बंद कर दिया तो दुनिया में आपको छेड़नेवाला कोई नहीं है। ४ आपके छेड़ने के ही परिणाम हैं ये सारे! जिस घड़ी आपका छेड़ना बंद हो जाएगा, तब आपका कोई परिणाम आपके पास नहीं आएगा। ५ आप सारी दुनिया के, सारे ब्रह्मांड के स्वामी हो। कोई ऊपरी ही नहीं है आपका। आप परमात्मा ही हो। कोई आपसे पूछनेवाला नहीं है।

६ ये सारे हमारे ही परिणाम हैं। हमें आज से किसीको स्पंदन करने का, किंचित् मात्र किसीके

लिए विचार करने का बंद कर देना है। विचार आए तो प्रतिक्रमण करके धो डालना, इसलिए सारा दिन किसीके स्पंदन के बगैर का गया! इस तरह दिन जाए तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

दिए हुए दुःखों के प्रतिस्पंदन

१ इस जगत् में आप किसीको दुःख देंगे, तो उसका प्रतिघोष आप पर पड़े बगैर रहेगा नहीं। स्त्री-पुरुष ने तलाक़ लेने के बाद, पुरुष फिर से शादी करे उसके बावजूद पहलीवाली स्त्री को दुःख रहता हो। तो उसके प्रतिघोष उस पुरुष पर पड़े बगैर रहते ही नहीं, २ और वह हिसाब वापस चुकाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : ज़रा विस्तारपूर्वक समझाइए न!

दादाश्री : यह क्या कहना चाहते है कि ३ जब तक आपके निमित्त से किसीको ज़रा-सा भी दुःख होता है, तो उसका असर आप पर ही पड़नेवाला है। और वह हिसाब आपको पूरा करना पड़ेगा, इसलिए चेतो।

आप ऑफ़िस में ४ असिस्टेंट को झिड़को तो उसका असर आप पर पड़े बगैर रहेगा या नहीं? पड़ेगा ही। बोलो अब, जगत् दुःख में से मुक्त किस तरह हो?

५ इसलिए किसीका असर छोड़ता नहीं है और बच्चे को सुधारने जाओ, लेकिन उससे उसे दुःख हो तो उसका असर आप पर पड़ेगा। इसलिए ऐसा कहो कि जिससे उसे असर न पड़े और वह सुधरे। तांबे के और काँच के बरतन में फर्क नहीं होता? आप तांबे के और काँच के बरतन को एक समझते हो? ६ तांबे का बरतन पिचक जाए तो ठीक हो सकता है। लेकिन काँच का तो टूट जाता है। बच्चे की तो पूरी ज़िन्दगी खतम हो जाती है।

७ इस अज्ञानता से ही मार खानी पड़ती है। इसे सुधारने के लिए आप कहो, उसे सुधारने के लिए कहो। लेकिन कहने से उसे जो दुःख हुआ, उसका असर आप पर आएगा।

प्रश्नकर्ता : इस काल में बच्चों को तो कहना पड़ता है न?

दादाश्री : कहने में हर्ज नहीं है, लेकिन ऐसा कहो कि उसे दुःख न हो और उसका प्रतिघोष वापस आप पर न पड़े। ८ हमें तय कर देना चाहिए कि हमें किसीको किंचित् मात्र दुःख देना नहीं है।

९ जिससे किसीको किंचित् मात्र दुःख नहीं होता हो, वह खुद सुखी होता है। उसमें दो मत ही नहीं है। हम जो आज्ञा देते हैं, वह आप सर्व दुःखों से मुक्त हो जाओ, वैसी आज्ञा देते हैं। और आज्ञा पालते हुए आपको कोई भी परेशानी नहीं होती। हमारी आज्ञा, कोई भी परेशानी रहित की है।

सिर्फ भावना ही करनी है

कोई हमें धौल मारे तो हमें दुःख होता है, उस 'लेवल' से देखना चाहिए। १ किसीको धौल मारते समय मन में आना चाहिए कि मुझे धौल मारे तो क्या होगा?

हम किसीके पास से रुपये दस हज़ार उधार लाए, फिर हमारे संयोग उल्टे हो गए इसलिए मन में विचार आए कि 'पैसे वापस नहीं दूँ तो क्या होनेवाला है!' उस घड़ी हमें न्याय से सोचना चाहिए कि, २ 'मेरे यहाँ से कोई पैसे ले गया हो और वह मुझे वापस नहीं दे तो क्या होगा मुझे?' ऐसी न्यायबुद्धि चाहिए। ३ 'ऐसा हो तो मुझे बहुत ही दुःख होगा, वैसे ही सामनेवाले को भी दुःख होगा। इसलिए मुझे पैसे वापस देने ही है।' ऐसा तय करना चाहिए और ऐसा तय करो तो वापस दिए जा सकेंगे।

सावधान रहने जैसा है इस जगत् में

कोई चाहे जितना पागलों-सा बोले, उस घड़ी हम जवाब दें, फिर वह चाहे जितना सुंदर हो लेकिन

१ ज़रा-सा भी स्पंदन चला जाए तो भी नहीं चलता। २ सामनेवाले को सबकुछ बोलने की छूट है। वह स्वतंत्र है। अभी वे ३ बच्चें पत्थर फेंके तो, उसमें वह स्वतंत्र नहीं है? ४ पुलिसवाला जब तक रोके नहीं, तब तक स्वतंत्र ही हैं। ५ सामनेवाला जीव तो चाहे सो ठाने, वह करे। टेढ़ा फिरे और बैर रखें तब तो लाखों जन्मों तक मोक्ष में नहीं जाने दे! इसलिए तो हम कहते हैं कि 'सावधान रहना। टेढ़ा मिले तो जैसे-तैसे करके भाईसाहब करके भी छूट जाना! इस जगत् से छूटने जैसा है।'

परमात्मा विभूति स्वरूप में

१ हम ब्रह्मांड के मालिक हैं। इसलिए किसी जीव में दख़ल नहीं करनी चाहिए। हो सके तो हैल्प करो और नहीं हो सके तो कोई परेशानी नहीं है। लेकिन किसीमें दख़ल होनी ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी उसका अर्थ ऐसा कि आत्मा को परमात्मा मानें?

दादाश्री : नहीं। मानना नहीं है, वह है ही परमात्मा। मानना तो गप्प कहलाता है। गप्प तो याद रहे और नहीं भी रहे, यह तो २ वास्तव में परमात्मा ही है। लेकिन यह परमात्मा विभूति स्वरूप में आए हुए है। दूसरा कुछ है ही नहीं। फिर भले ही ३ कोई भीख माँगता हो, लेकिन वह भी विभूति है और राजा हो, वह भी विभूति है। और लोग तो, राजा हो उसे विभूति स्वरूप कहते हैं, भीख माँगनेवाले को नहीं कहते। ४ मूल स्वरूप है, उसमें से विशेषता उत्पन्न हुई है, विशेष रूप हुआ है। इसलिए विभूति कहलाता है और ५ विभूति तो भगवान ही माना जाता है न! इसलिए किसीमें भी दख़ल तो करनी ही नहीं चाहिए। ६ सामनेवाला दख़ल करे तो उसे हमें सहन कर लेना चाहिए, क्योंकि भगवान दख़ल करें तो हमें उसे सहन करना ही चाहिए।

हम वास्तव में यह 'व्यवहार स्वरूप' नहीं है। ७ 'यह' सब सिर्फ 'टेम्परारी एडजस्टमेन्ट' है। बच्चे जैसे खिलौने खेलते हैं वैसे ८ पूरा जगत् खिलौने खेल रहा है! खुद के हित का कुछ भी करता ही नहीं। निरंतर परवशता के दु:ख में ही रहा करता है और टकराया करता है। संघर्षण और घर्षण, उससे आत्मा की अनंत शक्तियाँ सारी फ्रेक्चर हो जाती है।

९ नौकर प्याला-रकाबी तोड़े तो अंदर संघर्षण हो जाता है। उसका क्या कारण है? भान नहीं है, जागृति नहीं है कि मेरा कौन-सा और पराया कौन-सा? १० पराया का, मैं चलाता हूँ या दूसरा कोई चलाता है?

११ यह जो आपको ऐसा लगता है कि 'मैं चलाता हूँ', तो उसमें से आप कुछ भी चलाते नहीं हो। वह तो आप सिर्फ मानकर बैठे हो। आपको जो चलाना है, वह आपको पता नहीं है। पुरुष हो जाएँ तब पुरुषार्थ होता है। पुरुष ही नहीं हुए हैं, तब तक पुरुषार्थ किस तरह होगा?

भगवान ने देखा नुकसान में भी फ़ायदा

महावीर भगवान ने उनके शिष्यों को सिखलाया था कि आप बाहर जाते हो और १ लोग एकाध लकड़ी मारे तो हमें ऐसा समझना चाहिए कि सिर्फ लकड़ी ही मारी न? हाथ तो नहीं तोड़ा न? उतनी तो बचत हुई! इसलिए २ इसे ही लाभ समझना। कोई एक हाथ तोड़े तो, दूसरा तो नहीं तोड़ा न? ३ दोनों हाथ काट डाले, तब कहे पैर तो हैं न? ४ दोनों हाथ और दोनों पैर काट डाले तो कहना कि मैं ज़िंदा तो हूँ न? ५ आँखों से दिखता तो है न? लाभालाभ भगवान ने दिखलाया। तू रोना मत। हँस, आनंद कर। बात गलत नहीं है न?

६ भगवान ने सम्यक् दृष्टि से देखा, जिससे नुकसान में भी फ़ायदा दिखता है।

प्रतिकूलता की प्रीति

१ आपको (महात्माओं को) अब सिर्फ संयोग

ही रहे हैं। मीठे संयोग आपको इस्तेमाल करने नहीं आते। २ मीठे संयोग आप वेदते हो, इसलिए कड़वे भी वेदने पड़ते हैं। ३ लेकिन मीठे को 'जानो', तो कड़वे में भी 'जानपना' रहेगा! लेकिन आपकी अभी ४ पहले की आदतें जाती नहीं हैं, इसलिए वेदने जाते हो। ५ आत्मा वेदता ही नहीं है, आत्मा जाना ही करता है। जो वेदता है वह भ्राँत आत्मा है, प्रतिष्ठित आत्मा है। उसे भी हमें जानना चाहिए कि, 'अहोहो! यह प्रतिष्ठित आत्मा जलेबी में तन्मयाकार हो गया है।'

संयोग सुधारकर भेजो

संयोग और संयोगी ऐसे दो ही हैं। जितनी मात्रा में १ संयोगी सीधा उतनी मात्रा में संयोग सीधे और २ यदि संयोग टेढ़ा आया तो हमें तुरन्त ही समझ लेना चाहिए कि, हम टेढ़े थे इसलिए यह टेढ़ा आया। ३ संयोग को सीधा करने की ज़रूरत नहीं है लेकिन हमें सीधा होने की ज़रूरत है। संयोग तो अनंत हैं, वे कब सीधे होंगे? जगत् के लोग संयोगों को सीधे करने जाते हैं, लेकिन ४ खुद सीधा हो जाए तो संयोग अपने आप सीधे हो जाएँगे, खुद सीधा हुआ फिर भी थोड़े समय संयोग टेढ़े दिखते हैं, लेकिन फिर वे सीधे ही आएँगे। ५ कोई ऊपरी है नहीं, वहाँ संयोग क्यों टेढ़ा आए? ६ यह तो खुद टेढ़ा हुआ है इसलिए संयोग टेढ़े आते हैं। यह पेचिश होती है तब कोई उसके तुरन्त के ही बीज होते है? नहीं, ७ वह तो बारह साल पहले बीज गिरे हुए होते हैं उसकी अभी पेचिश होती है और पेचिश हुई यानी बारह साल की भूल तो मिटाए न? फिर, ८ वापस भूल नहीं की तो फिर से पेचिश नहीं होगी। ९ इस गाड़ी में चढ़ने के बाद भीड़वाली जगह मिलती है, क्योंकि खुद ही भीड़वाला है। खुद यदि भीड़ रहित का हुआ हो तो जगह भी भीड़ रहित की ही मिलती है। १० खुद की भूलें ही ऊपरी हैं, वह हमारी समझ में आ गया फिर है कुछ भय? यह हमें देखकर कोई भी खुश हो जाता है। हम ही खुश हो जाते हैं, इसलिए अपने आप सामनेवाला खुश हो जाता है। यह तो सामनेवाला हमें देखकर खुश तो क्या, मगर आफ़रीन हो जाता है। ११ अपना ही फ़ोटो है सामनेवाला!

रखो शुद्ध उपयोग का अभ्यास

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको करना क्या है?

आपको अब उपयोग रखना है। अभी तक आत्मा का 'डायरेक्ट' शुद्ध उपयोग था ही नहीं। १ प्रकृति जैसे नचाती थी, वैसे आप नाचते थे। और फिर कहते हो कि 'मैं नाचा! मैंने यह दान किया, मैंने ऐसा किया, वैसा किया, इतनी सेवा की!' अब आपको आत्मा प्राप्त हुआ है, इसलिए आपको उपयोग में रहना है। अब २ आप पुरुष हुए और आपकी प्रकृति अलग पड़ गई। ३ प्रकृति उसका खेल खेले बगैर रहनेवाली नहीं है, वह छोड़नेवाली नहीं है। और आप पुरुष को, पुरुषार्थ में रहने का, मतलब पुरुष को पुरुषार्थ करना है। 'ज्ञानी पुरुष' ने आज्ञा दी हो उसमें रहना है। उपयोग में रहना है।

उपयोग का मतलब क्या? यों बाहर निकले और गधे जाते हों, कुत्ते जाते हों, बिल्लियाँ जाती हों और हम उनमें शुद्धात्मा देखें नहीं और यों ही चलते रहें, तो हमारा उपयोग व्यर्थ गया कहलाता है। उसमें तो उपयोग रखकर उनमें आत्मा देखते-देखते जाएँ तो उसे शुद्ध उपयोग कहा जाता है। ऐसा शुद्ध उपयोग एक घंटा यदि रखे, उसे इन्द्र का अवतार मिले इतनी अधिक क़ीमती वस्तु है वह!

प्रश्नकर्ता : शुद्ध उपयोग व्यवहार में, व्यापार में रह सकता है क्या?

दादाश्री : ४ व्यवहार को और शुद्ध उपयोग को लेना देना ही नहीं है। व्यापार करता हो या चाहे जो करता हो, लेकिन स्वरूप ज्ञान प्राप्त करने के बाद, खुद पुरुष होने के बाद शुद्ध उपयोग होता है। स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति से पहले किसीको शुद्ध

उपयोग होता नहीं है। अब आप शुद्ध उपयोग कर सकते हो।

प्रश्नकर्ता : मतलब गधे को हम परमात्मा की तरह देखें, परमात्मा मानें तो.....

दादाश्री : नहीं, नहीं। [५] परमात्मा नहीं मानना है, परमात्मा तो भीतर बैठे हैं, वे परमात्मा और बाहर बैठा है वह गधा है। उस गधे पर हमें बोरी रखकर और भीतरवाले परमात्मा को देखकर चलना है।

[६] बहू में परमात्मा देखकर व्यवहार रखना है। नहीं तो औरत से शादी की हो, वे क्या साधु बन जाएँ? ये जवान लड़के क्या साधु बन जाएँ? नहीं, नहीं, [७] साधु नहीं बनना है। भीतर भगवान देखो। [८] भगवान क्या कहते हैं? मेरे दर्शन करो। मुझे दूसरी कोई पीड़ा नहीं है। मुझे कोई हर्ज नहीं है। व्यवहार, व्यवहार में बरतता है, उसमें आप मुझे देखो, शुद्ध उपयोग रखो।

परिणाम में समता

अपना 'अक्रम' का सिद्धांत ऐसा है कि पैसे गिरते हों तो पहले गिरते हुए बंद करना है और बाद में पहले के गिरे हुए, चुन लेने हैं! जगत् है, वह चुनता रहता है। अरे, गिर रहे हैं उसे तो पहले बंद कर, वर्ना निकाल ही नहीं होगा!

[१] आपका व्यवहार जितना हो वह सारा पूरा कर लिया, मतलब फिर आपको व्यवहार की ज़्यादा मुश्किलें नहीं आएँगी। [२] भीतर जैसी भावना हो वह सब पहले से तैयार होता है! 'विहार लेक' घूमने गए थे, वहाँ मुझे नया ही विचार आया कि 'ये सौ लोग, पचास स्त्रियाँ और पचास पुरुष सब मिलकर माताजी के गरबे घूमें तो कितना अच्छा!' तो यह विचार के साथ ही घूमकर ऐसे देखने गया, तब तक सब ऐसे खड़े हो गए थे और गरबा करने लगे थे! अब इसके लिए मैंने किसीसे कहा नहीं था, फिर भी हुआ! इसलिए ऐसा होता है! आपका सोचा हुआ व्यर्थ नहीं जाएगा, बोलना व्यर्थ नहीं जाएगा। अभी तो लोगों का कैसा जाता है? कुछ उगता ही नहीं। वाणी भी उगती नहीं, विचार भी उगते नहीं और वर्तन भी उगता नहीं है। तीन बार उगाही के लिए फेरे खाएँ फिर भी वह मिलता नहीं! यदि कभी मिल गया तब काटने को दौड़ता है!!!

इसमें तो कैसा है कि घर बैठे पैसे वापस देने आए ऐसा मार्ग है! पाँच-सात बार उगाही के लिए चक्कर लगाए हों, और वह नहीं मिला हो और अंत में मिले तब वह कहता है कि महीनेभर बाद आना। उस घड़ी, [३] आपके परिणाम बदलें नहीं, तो घर बैठे पैसे आते हैं!

आपके परिणाम बदल जाते हैं न? [४] 'यह बगैर अक़्ल का है, नालायक है, बेकार चक्कर लगाया।' ऐसा-वैसा इसलिए आपके परिणाम बदले हुए होते हैं। वापस आप जाओ तो वह आपको गालियाँ देता है। हमारे परिणाम बदलते नहीं हैं, फिर क्या चिंता? [५] परिणाम बदल जाते हैं, इसलिए सामनेवाला बिगड़ता नहीं हो तो भी बिगड़ता है।

परिणाम नहीं बिगड़ें तो?

प्रश्नकर्ता : उसका अर्थ यही होता है कि हम बिगाड़ते हैं?

दादाश्री : [१] अपना सबकुछ हम ही बिगाड़ते हैं। हमें जितनी अड़चनें आती हैं, वे सारी हमने ही बिगाड़ी हुई हैं। कोई टेढ़ा हो उसे सुधारने का रास्ता क्या? तब कहे कि, [२] सामनेवाला चाहे जितना दु:ख देता हो फिर भी उसके लिए उल्टा विचार तक नहीं आए, यह उसे सुधारने का रास्ता! इसमें अपना भी सुधरता है और उसका भी सुधरता है! जगत् के लोगों को उल्टा विचार आए बगैर रहता नहीं। और अपने यहाँ तो 'समभाव से निकाल' करने को कहा, [३] 'समभाव से निकाल' अर्थात् उसके लिए कोई भी (उल्टा) विचार नहीं करना है।

यदि बाघ के प्रतिक्रमण करे तो बाघ भी हमारे कहे अनुसार काम करता है। बाघ में और मनुष्यों में कोई फर्क है नहीं। [४] फर्क आपके स्पंदनों का है। उसका असर होता है। [५] बाघ 'हिंसक है' ऐसा आपके मन में ध्यान हो, तब तक वह खुद हिंसक ही रहता है और बाघ 'शुद्धात्मा है' ऐसा ध्यान रहे तो, वह शुद्धात्मा ही है। सबकुछ हो सके ऐसा है।

[६] इस बॉल को फेंकने के बाद अपने आप स्वभाव से ही परिणाम बंद हो जाएँगे। वह सहज स्वभाव है। वहाँ सारे जगत् की मेहनत व्यर्थ गई! [७] जगत् परिणाम को बंद करने जाता है और कॉज़ेज़ चलते ही रहते हैं! इसलिए फिर बरगद में से ही बीज और बीज में से बरगद बनता ही रहता है। [८] पत्ते काटने से दिन फिरते नहीं है, वह तो जड़ के साथ निकाल दें तो काम होता है। हम तो उसकी मुख्य जड़ में ज़रा-सी दवाई डाल देते हैं, इसलिए पूरा पेड़ सुख जाता है।

[९] यह संसार वृक्ष कहलाता है, इस ओर कड़वे फल आते हैं, इस ओर मीठे फल आते हैं। वे फिर खुद को ही खाने पड़ते हैं।

एक बार वृक्ष पर बंदर आए हों और आम तोड़ डालें, तो उसके मालिक के परिणाम कहाँ तक बिगड़ते हैं? परिणाम इतने सारे बिगाड़ता है कि आगे-पीछे का विचार किए बगैर बोल देता है कि, 'यह आम का वृक्ष काट डाला हो तो ही ठिकाने लगे!' अब यह तो भगवान की साक्षी में बात निकली वह क्या व्यर्थ जाएगी? [१०] परिणाम नहीं बिगड़े तो कुछ भी नहीं है। सब शांत हो जाए। बंद हो जाए!

यदि कोई इतना ही तय करे, कि [११] जो कोई दु:ख देता है, जो-जो करता है, जेब काटता है, उनमें से किसीका दोष नहीं है, लेकिन दोष मेरा है, [१२] मेरे कर्म के उदय का है। इसलिए किसीको दोषित की तरह नहीं देखो तो मुक्ति मिल जाए। लेकिन यह तो 'इसने मुझे ऐसे किया, ये मेरा चोरी कर गए, ये मेरा खा गए।' सब लोगों पर आरोप करते हैं, जो नहीं करना है वह करता है।

भूल ही ऊपरी आपकी

कोई ऊपरी नहीं है, कोई डाँटनेवाला नहीं है। [१] डाँटनेवाले तो अपनी भूल की वजह से, भूल नहीं हो तो कोई डाँटनेवाला ही नहीं है। [२] अपनी भूल मिट जाए तो कोई डाँटनेवाला है ही नहीं। कोई ऊपरी है ही नहीं, कोई विघ्नकर्त्ता है ही नहीं। भगवान से कहे कि, 'साहब, आप तो मोक्ष में पहुँच गए, लेकिन ये लोग मेरा चोरी कर जाते हैं, तो उसका क्या होगा?' तो भगवान कहें कि, 'भाई, [३] लोग चोरी करते ही नहीं। तेरे पास तेरी भूल है तब तक चोरी करेंगे। तेरी भूल मिटा डाल।' बाकी [४] कोई तेरा नाम भी नहीं दे सके ऐसी तुझ में शक्ति है! स्वतंत्र शक्ति लेकर आया हुआ है हर एक जीव! जीव मात्र संपूर्ण स्वतंत्र ही है। [५] परतंत्रता लगती है, लोग उसे सताते हैं, वह उसकी खुद की भूल की वजह से ही। [६] अपनी भूलों की वजह से यह हाल हुआ है। वास्तव में देखें तो [७] अपना कोई ऊपरी है ही नहीं, सिर्फ खुद की भूलें ही ऊपरी हैं। इसलिए भूलों को मिटा दो और नयी भूल नहीं होने देना।

अभिप्राय से ही बंधन

प्रश्नकर्ता : कई मनुष्य ऐसे होते हैं कि उनके लिए अभिप्राय बँधा हुआ होता है कि 'यह मनुष्य अच्छा है, यह लबाड़ है, यह लुच्चा है, यह तो काटने ही आया है।'

दादाश्री : [१] अभिप्राय बँधे वही बंधन। [२] हमारी जेब में से कल कोई रुपये निकाल गया हो और आज वह फिर से यहाँ आए तो हमें शंका नहीं रहती कि वह चोर है। क्योंकि [३] कल उसके कर्म का उदय वैसा था। [४] आज उसका उदय कैसा होगा, वह कैसे कहा जाए?

प्रश्नकर्ता : लेकिन प्राण और प्रकृति साथ में जाते हैं।

दादाश्री : वह प्राण और प्रकृति नहीं देखने हैं। हमें उसके साथ लेना-देना नहीं है। ५ वह कर्म के अधीन है बेचारा! वह अपने कर्म भुगत रहा है, ६ हम अपने कर्म को भुगत रहे हैं। हमें सावधान रहना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : उस वक्त उसके प्रति समभाव रहे या नहीं भी रहे।

दादाश्री : हमारे कहे अनुसार आप करो तो आपका काम हो जाए कि, ७ यह सब कर्म के अधीन है। और ८ अपना जानेवाला होगा तो ही जाएगा। इसलिए आपको घबराने का कोई कारण नहीं है।

लोकसंज्ञा से अभिप्राय अवगाढ़

भगवान ने सबको निर्दोष देखा था। किसीको दोषित उन्होंने देखा नहीं था और १ अपनी ऐसी चोखी दृष्टि होगी तब चोखा वातावरण होगा। फिर जगत् सारा बगीचे जैसा लगा करेगा। २ वास्तव में लोगों में दुर्गंध नहीं है। लोगों का खुद अभिप्राय बाँधता है। ३ हम चाहे जिसकी बात करें लेकिन हमें किसीका अभिप्राय नहीं होता कि, वह ऐसा ही है!

फिर अनुभव भी होता है कि यह अभिप्राय निकाल दिए इसलिए इस भाई में यह बदलाव हो गया। ४ अभिप्राय बदलने के लिए क्या करना पड़ता है कि वह चोर हो तो हमें ऐसा कहना चाहिए कि, 'वह साहूकार है। मैंने इनके लिए ऐसा अभिप्राय बाँधा था, वह अभिप्राय गलत है, अब वह अभिप्राय मैं छोड़ देता हूँ।' ऐसा 'गलत है, गलत है' कहना चाहिए। ५ हमारा अभिप्राय 'गलत है' ऐसा कहना चाहिए, ताकि अपना मन बदले। नहीं तो मन बदलता नहीं!

बाकी, सबके लिए हमें कुछ होता नहीं है। ६ रोज़ चोरी करता हो तो हमें वह चोर है, ऐसा अभिप्राय बाँधने की ज़रुरत ही क्या है? वह चोरी करता है, वह उसके कर्म का उदय है! और जिसका लेनेवाला होता है वह उसके कर्म का उदय है, इसमें हमें क्या लेना-देना? लेकिन ७ हम उसे चोर कहें तो वह अभिप्राय ही है न? ८ और वास्तव में तो वह आत्मा ही है न?

अभिप्रायों का अंधापन

१ 'ये भाई हमेशा दान देते हैं और आज भी वे दान देंगे', ऐसा मानना वह 'प्रेजुडिस' (पूर्वग्रह) है। कोई मनुष्य रोज़ हमें ताने मारता हो और आज खाने पर बुलाने आया हो तो भी उसे देखते ही विचार आता है कि यह ताने मारेगा, वह 'प्रेजुडिस'। २ इस 'प्रेजुडिस' की वजह से संसार खड़ा रहा है। ३ पहले का 'जजमेन्ट' छोड़ दो, वह तो बदलता ही रहता है। ४ चोर चोरी हमारे देखते हुए करे तो भी उस पर पूर्वग्रह मत रखना, कल वो साहुकार भी हो जाए। हमें एक क्षणभर भी पूर्वग्रह नहीं होता।

कोई तीनपत्तीवाला यहाँ आया हो और आपका उस पर अभिप्राय बैठ गया हो कि 'यह तीनपत्तीवाला है' तो वह यहाँ बैठा हो उतनी देर आपके मन में खटकता रहता है। दूसरे किसीको नहीं खटकता, उसका कारण क्या है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे जानते नहीं हैं कि 'यह तीनपत्तीवाला है', इसलिए।

दादाश्री : दूसरे जानते हैं, लेकिन अभिप्राय नहीं बैठाते और ५ आपको अभिप्राय बैठा हैं इस वजह से खटकता है। वह अभिप्राय हमें छोड़ देना चाहिए। ये अभिप्राय हमने ही बाँधे हैं इसलिए वह हमारी ही भूल है, उस वजह से वे खटकते हैं। सामनेवाला ऐसा नहीं कहता कि मेरे लिए अभिप्राय बाँधो। ६ हमें खटकता है वह तो हमारी ही भूल का परिणाम है।

अभिप्राय किस तरह छूटें?

[१] कोई हमसे दग़ा कर गया हो वह हमें याद नहीं करना चाहिए। पिछला याद करने से बहुत नुकसान होता है। अभी वर्तमान में वह क्या करता है वह देख लेना है, वर्ना 'प्रेजुडिस' कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ध्यान में तो रखना चाहिए न वह?

दादाश्री : वह तो अपने आप रहता ही है। [२] ध्यान में रखें तो 'प्रेजुडिस' होता है। 'प्रेजुडिस' से तो फिर से संसार बिगड़ता है। हमें वीतराग भाव से रहना चाहिए। [३] पिछला लक्ष्य में रहता ही है, लेकिन वह कोई 'हैल्पिंग' वस्तु नहीं है। [४] हमारे कर्म के उदय ऐसे थे इसलिए उसने हमारे साथ ऐसा वर्तन किया। [५] उदय अच्छे होंगे तो ऊँचा वर्तन करेगा। इसलिए रखना मत 'प्रेजुडिस'। [६] आपको क्या पता चलता है कि पहले धोखा देनेवाला आज मुनाफा करवाने आया है या नहीं? और आपको उसके साथ व्यवहार करना हो तो करो और नहीं करना हो तो मत करो, लेकिन 'प्रेजुडिस' मत रखना। और शायद व्यवहार करने का वक्त आए फिर तो बिलकुल 'प्रेजुडिस' मत रखना।

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय वीतरागता तोड़ता है?

दादाश्री : हाँ, हमें अभिप्राय नहीं होने चाहिए। [७] अभिप्राय अनात्म विभाग के हैं, वह आपको 'जानना' है कि वह गलत है, नुकसानदायक है। [८] खुद के दोषों से, खुद की भूलों से, खुद के 'व्यू पोइन्ट' से अभिप्राय बाँधते हैं। आपको अभिप्राय बाँधने का क्या 'राइट' (अधिकार) है?

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय बँध जाएँ और वे मिटे नहीं, तो नया कर्म बँधा जाता है?

दादाश्री : यह अक्रम विज्ञान प्राप्त हुआ हो और आत्मा-अनात्मा का भेदज्ञान हुआ हो उसे नया कर्म नहीं बँधता। हाँ, अभिप्रायों का प्रतिक्रमण नहीं हो तो सामनेवाले पर उसका असर रहा करता है, उससे उसका आप पर भाव नहीं आता। चोखे भाव से रहें तो एक भी कर्म बँधता नहीं, और यदि प्रतिक्रमण करें तो वह असर भी उड़ जाता है। सात से गुणा किया, उसे सात से भाग कर दिया वही पुरुषार्थ।

[९] जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत सब 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' के हाथ में है, तो अभिप्राय रखने की ज़रूरत ही कहाँ है? स्वरूप ज्ञान मिलने के बाद, ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध प्राप्त होने के बाद दो-पाँच अभिप्राय पड़े हों उन्हें निकाल दें तो 'वीद ऑनर्स' (मानपूर्वक) पास हो जाएँ हम!

[१०] अभिप्राय के कारण से जैसा है वैसा देखा नहीं जा सकता। मुक्त आनंद अनुभव नहीं किया जा सकता, क्योंकि अभिप्राय का आवरण है। अभिप्राय ही नहीं रहे तब निर्दोष हुआ जाता है। स्वरूप ज्ञान के बाद अभिप्राय हैं तब तक आप मुक्त कहलाते हो, लेकिन महामुक्त नहीं कहलाते। अभिप्राय के कारण से ही अनंत समाधि रुकी हुई है।

[११] पहले जो 'कॉज़ेज़' थे उसके अभी 'इफेक्ट' आते हैं। लेकिन उस 'इफेक्ट' में भी 'अच्छा है, बुरा है' ऐसे अभिप्राय देते हैं, उससे राग-द्वेष होते हैं। क्रिया से 'कॉज़ेज़' नहीं बँधते, लेकिन अभिप्राय से 'कॉज़ेज़' बँधते हैं।

अनादि का अध्यास

हमारी बचपन में ऐसी बुद्धि थी। सामनेवाले के लिए 'स्पीडी' अभिप्राय बाँध देती। चाहे जिसके लिए स्पीडी अभिप्राय बाँध देती। इसलिए मैं समझ जाऊँ कि आपका यह सब क्या चलता होगा?

वास्तव में तो, [१] किसीके लिए भी अभिप्राय रखने जैसा जगत् ही नहीं है। किसीके लिए अभिप्राय रखना वही अपना बंधन है और किसीके लिए अभिप्राय रहे नहीं वह अपना मोक्ष है। [२] किसीका

और हमारा क्या लेना-देना? वे उनके कर्म भुगत रहे हैं, हम अपने कर्म भुगत रहे हैं। सभी अपने-अपने कर्म भुगत रहे हैं। उसमें किसीको लेना-देना ही नहीं है, किसीके बारे में अभिप्राय बाँधने की ज़रूरत ही नहीं है।

भगवान ने तो यहाँ तक कहा है कि कल अपनी जेब में से सौ रुपये एक व्यक्ति ले गया हो और हमें सांकेतिक रूप से या इर्द-गिर्द के वातावरण से यह पता चला। फिर दूसरे दिन वह आए तो देखते ही उस पर शंका करना वह गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : और यह अभिप्राय रहता है कि यह झूठा है, तो वह गुनाह है?

दादाश्री : [३] शंका करना, वहीं से गुनाह उत्पन्न होता है। भगवान ने क्या कहा है कि [४] कल उसके कर्म के उदय से चोर था और आज नहीं भी हो, यह तो सब उदय अनुसार है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर हमें बरतना किस तरह से? हम यदि अभिप्राय नहीं रखते, तो वह आदी हो जाता है कि 'यह तो ठीक है, ये कुछ बोलनेवाले नहीं हैं। इसलिए हम रोज़-रोज़ आक्षेप देते जाएँ।'

दादाश्री : नहीं, हमें तो उसे अभिप्राय दिए बगैर, सावधानी से चलना है। हम जेब में पैसे रखते हों और हमने जाना कि यह व्यक्ति यहाँ से उठाकर ले गया है, तो किसी पर अभिप्राय नहीं बाँधना चाहिए, इसलिए हमें पैसे दूसरी जगह पर रख देने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं है, यह तो एक व्यक्ति खुद का कोई दूसरा लेनदार हो, उसे ऐसा कहेगा, 'मैंने चंदूभाई से कहा है, उन्होंने आपको पैसे भेज दिए है।' तब लगता है कि मैं तुझे मिला नहीं हूँ, तू मुझे मिला नहीं है और इतना झूठ बोलता है? मेरे साथ ऐसा होता है, वहाँ अब किस तरह बरतना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, ऐसा सब झूठ भी बोलते हैं, लेकिन वह बोला किस कारण से? क्यों दूसरों का नाम नहीं दिया और चंदूभाई का ही नाम देता है? मतलब [५] हम कुछ गुनहगार हैं। अपने कर्म का उदय, वही अपना गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यहाँ मुझे किस तरह बरतना?

दादाश्री : राग-द्वेष से यह संसार खड़ा होता है। [६] इसका मूल ही राग-द्वेष है। राग-द्वेष क्यों होता है? तब कहे कि [७] किसीमें भी दख़ल की, कि राग-द्वेष खड़ा हुआ। वह घर में से चोरी करके गया हो फिर भी [८] आप उसे चोर मानो, तो आपका राग-द्वेष खड़ा हुआ। क्योंकि [९] 'यह चोर है' ऐसा आप मानते हो और वह तो लौकिक ज्ञान है। [१०] अलौकिक ज्ञान वैसा नहीं है। अलौकिक ज्ञान में तो एक ही शब्द कहते हैं कि वह तेरे ही कर्म का उदय है। [११] उसके कर्म का उदय और तेरे कर्म का उदय, वे दोनों इकट्ठे हुए इसलिए वह ले गया। उसमें तू वापस फिर से किसलिए अभिप्राय बाँधता है कि यह चोर है?

हम तो आपसे कहते हैं न कि, सावधानी से चलना, पागल कुत्ता भीतर घुस जाता है ऐसा लगे कि तुरंत 'अपना' दरवाज़ा बंद कर दो। लेकिन उसके लिए आप ऐसा कहो कि यह पागल ही है, तो उसे अभिप्राय बाँधा कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : अरे दादा, कुत्ता घुस जाएगा, इसलिए दरवाज़ा बंद करने के बजाय मैं सामने ज़ोर लगाऊँ और दरवाज़ा बंद करते-करते दरवाज़े की फज़ीहत करूँ और कुत्ते की भी फज़ीहत करूँ!

दादाश्री : यह सब लौकिक ज्ञान है। भगवान का अलौकिक ज्ञान तो क्या कहता है कि किसी पर आरोप भी नहीं लगाना, किसी पर अभिप्राय नहीं बाँधना। किसीके लिए कुछ भाव ही नहीं करना। [१२]

'जगत् निर्दोष ही है!' ऐसा समझोगे तो छूटोगे। १३ जगत् के तमाम जीव निर्दोष ही हैं और मैं अकेला ही दोषित हूँ, १४ अपने ही दोषों को लेकर मैं बँधा हुआ हूँ, ऐसी दृष्टि होगी तब छूटा जाएगा।

भगवान ने जगत् निर्दोष देखा, मुझे भी कोई दोषित नहीं दिखता है। फूलों का हार चढ़ाए तो भी कोई दोषित नहीं और गालियाँ दे तो भी कोई दोषित नहीं है और जगत् निर्दोष ही है। यह तो १५ मायावी दृष्टि के कारण से सब दोषित दिखते हैं। इसमें सिर्फ दृष्टि का ही दोष है।

दानेश्वरी मनुष्य दान देता है उसे वे कहे, 'ये दान देते हैं वे कितने अच्छे लोग हैं?' तब भगवान कहते हैं कि, 'तू किसलिए खुश होता है? वह अपने कर्म के उदय भोग रहा है। १६ दान लेनेवाले भी उनके कर्म के उदय भोग रहे हैं। तू बीच में बगैर काम के किसलिए झँझट करता है?' १७ चोरी करनेवाले चोरी करते हैं। वे भी अपने कर्म के उदय भुगत रहे हैं। १८ जगत् सारा अपने-अपने कर्म को ही वेद रहा है!

हमने आपको जब से देखा, जब से पहचाना, तब से १९ हमारा तो किसी दिन अभिप्राय नहीं बदलता। फिर आप ऐसे घूमो या वैसे घूमो, वह सब आपके कर्म के उदय के अधीन है।

जब तक खुद के दोष दिखते नहीं हैं और दूसरों के ही दोष दिखते हैं, ऐसी दृष्टि जब तक है, तब तक संसार खड़ा रहनेवाला है। और जब दूसरों का एक भी दोष नहीं दिखेगा और खुद के सारे दोष दिखेंगे, तब जानना कि मोक्ष में जाने की तैयारी हो गई। बस इतना ही दृष्टि का फर्क है!

२० दूसरों के दोष दिखते हैं वह अपनी ही दृष्टि में भूल है। क्योंकि २१ ये सारे जीव कोई खुद की सत्ता से नहीं हैं, परसत्ता से हैं। २२ खुद के कर्म के आधार पर हैं। निरंतर कर्मों को भुगतते ही रहते हैं! २३ उसमें किसीका दोष होता ही नहीं है। जिसे यह समझ में आ गया, वह मोक्ष में जाएगा। नहीं तो वकालत जैसा समझ में आया, तो यहीं का यहीं रहेगा। २४ यहाँ का न्याय तोलेगा तो यहीं का यहीं ही रहेगा।

छूटे अभिप्राय तो हम मुक्त

सारा जगत् अभिप्राय की वजह से चल रहा है। ऐसे, ये अभिप्राय कोई बैठाता नहीं है लेकिन १ लोकसंज्ञा से अभिप्राय बैठ जाते हैं। २ हर एक की अपनी प्रकृति के अनुसार अभिप्राय बैठे होते हैं। वे अभिप्राय सारे बैठ गए हैं, वे सारे निकालने तो पड़ेंगे ही न! ३ अपने सब अभिप्राय हमें धो डालने हैं ताकि हम छूटे जाएँ।

मेरा तो पहले से ही सिद्धांत है कि मैंने जो पौधा पानी पिलाकर बड़ा किया हो, तो वहाँ से मुझे रेलवे लाइन भी ले जानी हो तो उसके पास से मोड़ लूँ, लेकिन मेरा बड़ा किया हुआ पौधा नहीं उखाड़ूँ! सिद्धांत होना चाहिए। एक बार मंडन करने के बाद खंडन कभी भी नहीं करना चाहिए। खंडन की बात तो कहाँ रही, लेकिन आप मिले हो तब से ४ आपके लिए जो अभिप्राय बाँधा है, वह एक सेकन्ड के लिए भी मेरा अभिप्राय नहीं बदलता!

'ज्ञानी पुरुष' का कैसा सिद्धांत

आज मैं तय करूँ कि यह मनुष्य चोखा है, फिर उस मनुष्य ने मेरी जेब में से पैसे लिए हों, कोई प्रमाण देता हो कि मैंने खुद उसे चोरी करते देखा है, तो भी मैं कहूँ कि, 'वह चोर नहीं है'। क्योंकि हमारी समझ अलग है। १ वह मनुष्य हमेशा के लिए कैसा है, वह हमने देख लिया होता है, फिर संयोगवश वह मनुष्य चाहे जो करे उसकी हम *नोंध* नहीं करते हैं। जगत् सारा संयोगवश की *नोंध* करता है।

२ प्रकृति तो अभिप्राय भी रखती है और सबकुछ रखती है, लेकिन हमें अभिप्राय रहित होना चाहिए। ३ हम अलग, प्रकृति अलग, 'दादा' ने वह

अलग कर दिया है। फिर हमें 'हमारा' भाग अलग अदा करना है। यह ४'पराई पीड़ा' में उतरना नहीं है।

जैसा अभिप्राय वैसा असर

प्रश्नकर्ता : ढोल बज रहा हो तो, चिड़चिड़े को चिढ़ क्यों होती है?

दादाश्री : १वह तो मान लिया कि 'नहीं पसंद है' इसलिए। यह ढोल बजाती हो तो हमें कहना चाहिए कि, 'अहो, २ढोल बहुत अच्छा बज रहा है!' इसलिए फिर भीतर कुछ नहीं होता। ३'यह खराब है' ऐसा अभिप्राय दिया फिर भीतर सारी मशीनरी बिगड़ जाती है। हमें तो नाटकीय भाषा में कहना चाहिए कि 'बहुत अच्छा ढोल बजाया'। इसलिए भीतर छूता नहीं है।

कौन किससे टकराया?

लोग ऐसा कहते हैं न कि, 'ठोकर मुझे लगी'। ऐसा ही कहते हैं न कि, 'मैं ऐसे जा रहा था और ठोकर मुझे लगी?' १ठोकर तो उसी जगह पर, रोज़ वहीं की वहीं बैठी होती है। २ठोकर कहती है, 'अभागे, तू मुझे लगा! तू टकराता रहता है। मैं ना कहती हूँ फिर भी वापस टकराता है! मेरा तो मुकाम ही इसी जगह पर है। ३यह अभागा अंधे जैसा मुझसे टकराता है।' ठोकर कहती है वह ठीक है न? ऐसी यह दुनिया है! फिर मोक्ष ढूँढे तो कहाँ से होगा?

अंत में साथ में कौन?

प्रश्नकर्ता : 'मैं कहता हूँ, वह सच्चा है', ऐसा मानना नहीं, ऐसा?

दादाश्री : १सच्चा हो तो भी हमें क्या? मेरे कहने का मतलब है कि, २अर्थी में अकेले को ही जाना है न! फिर ये बगैर काम की झँझटें सिर पर लेकर कहाँ घूमें?

जन्म से पहले चलता और मरने के बाद चलेगा,
अटके नहीं किसी दिन व्यवहार रे, सापेक्ष संसार रे...

अनंत अवतार इसी पीड़ा में पड़ा है! ये तो इस जन्म के पत्नी-बच्चे हैं, लेकिन हर एक जन्म में जहाँ-तहाँ पत्नी-बच्चे ही किए हैं! राग-द्वेष किए हैं और कर्म ही बाँधे हैं! ३यह सगाई-वगाई कुछ नहीं मिलता! ४यह तो कर्मफल देता रहता है। घड़ी में उजाला देता है और घड़ी में अंधेरा देता है। घड़ी में फटके देता है और घड़ी में फूल चढ़ाता है! इसमें सगाई तो होती होगी?

५यह तो अनादि से चलता ही रहता है! हम इसे चलानेवाले कौन? हम अपने कर्म से कैसे छूटें, वही 'देखा' करना है। बच्चों को और हमें कुछ लेना-देना नहीं है। यह तो बगैर काम की मुसीबत! ६सभी कर्मों के अधीन हैं। यदि सच्ची सगाइयाँ होती न तो घर में सब तय करते हैं कि हमें घर में झगड़े नहीं करने हैं। लेकिन ये तो घंटे-दो घंटों में लड़ पड़ते हैं! क्योंकि वह ७किसीके हाथ में सत्ता ही नहीं है न! ये तो सारे कर्म के उदय हैं। पटाखे फूटते हैं ऐसे फटाफट-फटाफट फूटते हैं! ८कोई सगा भी नहीं है और प्यारा भी नहीं है, तो फिर शंका-कुशंका करने की कहाँ रही? ९'आप' खुद 'शुद्धात्मा', यह 'आपका' 'पड़ोसी' शरीर ही आपको दुःख देनेवाला है न! और १०बच्चे तो 'आपके' 'पड़ोसी' के बच्चे। उनके साथ हमें क्या झँझट? और पड़ोसी के बच्चे माने नहीं, तब हम उन्हें ज़रा-सा कहने जाएँ तब बच्चे क्या कहते हैं कि, 'हम किस बात के बच्चे आपके?' हम तो 'शुद्धात्मा' हैं! ११किसीको किसीकी परवा नहीं है!!!

छुटकारे की चाबी कौन-सी?

१इस जगत् का कानून क्या है? कि शक्तिवाला अशक्तिवाले को मारता है। २कुदरत तो शक्तिवाला किसे बनाती है कि पाप कम किए हों, उसे शक्तिवाला बनाती है और पाप ज़्यादा किए हों, उसे अशक्तिवाला बनाती है।

यदि ३आपको छुटकारा पाना हो तो एक बार

मार खा लो। मैंने सारी ज़िन्दगी ऐसा ही किया है। उसके बाद मैंने निष्कर्ष निकाला कि मुझे किसी प्रकार की मार रही नहीं, भय भी रहा नहीं। मैंने पूरा 'वर्ल्ड' क्या है, उसका निष्कर्ष निकाला है। मुझे खुद को तो निष्कर्ष मिल गया है, लेकिन अब लोगों को भी निष्कर्ष निकाल देता हूँ।

इसलिए कभी न कभी तो इस लाइन पर आना ही पड़ेगा न? [४] कानून किसीको छोड़ता नहीं है। ज़रा-सा गुनाह किया कि चार पैरोंवाला बनकर भुगतना पड़ेगा। चार पैरों में फिर सुख लगता है कुछ?

[५] गुनाह मात्र बंद करो। अहिंसा से आपको किसी भी प्रकार का मार पड़ने का भय नहीं रहेगा। कोई मारेगा, कोई काट खाएगा, इतना भी भय मत रखना। यह रूम सारा साँपों से भरा हुआ हो फिर भी वह अहिंसक पुरुष भीतर घुसे तो साँप एक-दूसरे पर चढ़ जाएँगे, लेकिन उसे नहीं छूएँगे!

इसलिए सँभलकर चलना। [६] यह जगत् बहुत ही अलग तरह का है, बिलकुल न्याय स्वरूप है! जगत् का निष्कर्ष निकालकर अनुभव के स्टेज पर लें, तो ही काम होगा न? 'इसका क्या परिणाम आएगा?' उसकी 'रिसर्च' करनी पड़ेगी न?

प्रश्नकर्ता : मार खाने के बाद 'रिसर्च' पर जाता है न?

दादाश्री : हाँ, [७] असल 'रिसर्च' तो मार खाने के बाद ही होती है। मार देने के बाद 'रिसर्च' नहीं होती।

कोमनसेन्स मतलब?

व्यवहार शुद्ध होने के लिए क्या चाहिए? [१] 'कोमनसेन्स कम्प्लीट' चाहिए। स्थिरता-गंभीरता चाहिए। व्यवहार में 'कोमनसेन्स' की ज़रूरत है। 'कोमनसेन्स' मतलब 'ऐवरीव्हेर एप्लिकेबल', स्वरूप ज्ञान के साथ 'कोमनसेन्स' हो तो बहुत सुंदर लगता है।

प्रश्नकर्ता : 'कोमनसेन्स' किस तरह प्रकट होता है?

दादाश्री : [२] कोई हमसे टकराए, लेकिन हम खुद किसीसे टकराए नहीं, उस तरह से रहे, तो 'कोमनसेन्स' उत्पन्न होता है। लेकिन खुद किसीसे टकराना नहीं चाहिए, वर्ना 'कोमनसेन्स' चला जाता है! [३] घर्षण खुद की तरफ से नहीं होना चाहिए।

सामनेवाले के घर्षण से 'कोमनसेन्स' उत्पन्न होता है। यह आत्मा की शक्ति ऐसी है कि घर्षण के समय कैसे बरतना, उसका सारा उपाय बता देती है और एक बार बताने के बाद वह ज्ञान जाता नहीं। ऐसे करते-करते 'कोमनसेन्स' एकत्रित होता है।

हमारा विज्ञान प्राप्त करने के बाद मनुष्य ऐसे रह सकता है। या फिर सामान्य जनता में कोई मनुष्य इस तरह रह सकता है, ऐसे पुण्यशाली लोग होते हैं! लेकिन वे तो अमुक जगह पर रह सकते हैं, हर एक बाबत में नहीं रह सकते!

[४] सारी आत्मशक्ति यदि कभी खतम होती हो तो वह घर्षण से। संघर्ष से ज़रा-सा भी टकराए तो खतम! [५] सामनेवाला टकराए तो हमें संयमपूर्वक रहना चाहिए! टकराव तो होना ही नहीं चाहिए। फिर [६] यह देह जानी हो तो जाए, लेकिन टकराव में नहीं आना चाहिए।

[७] देह तो किसीके कहने पर चली नहीं जाती। देह, वह तो व्यवस्थित के ताबे में है!

[८] इस जगत् में बैर से घर्षण होता है। संसार का मूल बीज बैर है। जिसके बैर और घर्षण, दोनों बंद हो गए उसका मोक्ष हो गया! प्रेम बाधक नहीं है, बैर जाए तो प्रेम उत्पन्न होता है।

मुझे खास घर्षण नहीं होता। मुझमें 'कोमनसेन्स'

जबरदस्त है, इसलिए आप क्या कहना चाहते हो वह तुरन्त ही समझ में आ जाता है। लोगों को ऐसा लगता है कि ये दादा का अहित कर रहे हैं, लेकिन [१] मुझे तुरन्त समझ में आ जाता है कि यह अहित, अहित नहीं है। संसारिक अहित नहीं है और धार्मिक अहित भी नहीं और आत्मा के संबंध में अहित है ही नहीं। लोगों को ऐसा लगता है कि आत्मा का अहित कर रहे हैं, लेकिन मुझे उसमें हित समझ में आता है, उतना इस 'कोमनसेन्स' का प्रभाव है। इसलिए हमने 'कोमनसेन्स' का अर्थ लिखा है कि 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल।'

बुद्धि और प्रज्ञा का डिमार्केशन

प्रश्नकर्ता : अंत:करण के कौन-से हिस्से को पहले इफेक्ट होता है?

दादाश्री : पहले [१] बुद्धि को 'इफेक्ट' होता है। बुद्धि यदि हाज़िर नहीं हो तो असर नहीं होता है।

प्रश्नकर्ता : यह प्रज्ञा ने काम किया या बुद्धि ने काम किया, वह किस तरह पता चले? बुद्धि और प्रज्ञा की व्याख्या क्या है?

दादाश्री : *अजंपा* करवाए वह बुद्धि। प्रज्ञा में अजंपा नहीं होता। हम लोगों को [२] ज़रा-सा भी अजंपा हो तो समझना कि बुद्धि का चलन है। आपको बुद्धि नहीं इस्तेमाल करनी है तो भी इस्तेमाल होती ही है। [३] वही (बुद्धि) आपको चैन से बैठने नहीं देती है। वह आपको 'इमोशनल' करवाती है। उस बुद्धि से हमें कहना चाहिए कि 'हे बुद्धिबहन! आप अपने मायके जाओ। हमें अब आपके साथ कोई लेना-देना नहीं है।' सूर्य का उजाला हो, फिर मोमबत्ती की ज़रूरत है? यानी आत्मा का प्रकाश होने के बाद बुद्धि के प्रकाश की ज़रूर रहती नहीं है। हमें बुद्धि नहीं होती। हम अबुध होते हैं।

हार्टिली पछतावा

आपको साथ-साथ [१] समझना चाहिए कि यह बुद्धि गलत है, तब से वह ग्रंथियों का छेदन हो जाता है। इस जगत् में सिर्फ ज्ञान ही प्रकाश है। [२] यह मेरा अहितकारी है, ऐसा उसकी समझ में आए, ऐसा ज्ञान उसे प्राप्त हो, तो वह ग्रंथियों का छेदन कर देता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो सभी ऐसा मानते हैं कि 'झूठ बोलना पाप है, बीड़ी पीना खराब है, माँसाहार करना, असत्य बोलना, गलत तरीके से बरताव करना वह सब खराब है।' फिर भी लोग गलत करते ही जाते हैं। ऐसा क्यों?

दादाश्री : [३] 'यह सब गलत है, ऐसा नहीं करना चाहिए।' ऐसा सब बोलते हैं, वे ऊपर-ऊपर से बोलते हैं। 'सुपरफ्लुअस' बोलते हैं, 'हार्टिली' नहीं बोलते हैं। बाकी यदि ऐसा 'हार्टिली' बोलें तो उसे कुछ टाईम के बाद जाना ही पड़ेगा! आपका चाहे जैसा बुरा दोष हो, लेकिन उसका आपको बहुत 'हार्टिली' पछतावा हो तो वह दोष वापस नहीं होता। और वापस हो तो भी उसका हर्ज नहीं है, लेकिन पछतावा खूब करते रहो।

अब कितने लोगों को ऐसा होता है कि खूब पछतावा किया। फिर भी ऐसा दोष होता है, तो उसे ऐसा लगता है कि, 'यह ऐसा क्यों हुआ? इतना सारा पछतावा हुआ फिर भी? [४] वास्तव में तो 'हार्टिली' पछतावा हो तो, उससे दोष अवश्य जाते हैं!

कषायों से आवृत हुए परमात्मा

[१] ये क्रोध-मान-माया-लोभ वे सब कमज़ोरियाँ कहलाती हैं। और वे कमज़ोरियाँ जाएँ तो परमात्मा प्रकट होते हैं। [२] कमज़ोरी रूपी आवरण है। फिर [३] 'प्रेजुडिस' बहुत होता है। एक मनुष्य के बारे में मानकर बैठ गए हों, तो वह वैसे का वैसा ही हमें लगता रहता है। वैसा हमेशा के लिए वह होता नहीं है। [४] हर सेकन्ड पर फेरफार होता है। [५] सारा जगत् परिवर्तनशील है। निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है।

बिना गुत्थीवाला व्यवहार यानी सरल मोक्षमार्ग

हमारे गुस्से से सामनेवाले को दु:ख हुआ हो या सामनेवाले को कुछ भी नुकसान हुआ हो, तब हमें चंदूभाई (फाइल नं-१) से कहना चाहिए कि, 'हे चंदूभाई, प्रतिक्रमण कर लो, माफ़ी माँग लो।' सामनेवाला मनुष्य यदि सीधा नहीं हो, और हम उसके पैर पड़ें तब वह ऊपर से हमें चपत लगाए कि देखो अब ठिकाने पर आया!

बड़ा ठिकाने पर लानेवाले ये लोग! ऐसे लोगों के साथ झँझट कम कर देनी चाहिए। लेकिन [१] उसका गुनाह तो माफ कर ही देना चाहिए। [२] वह चाहे जैसे अच्छे भाव से या बुरे भाव से आपके पास आया हो, पर उसके साथ कैसा रखना वह आपको देखना है। [३] सामनेवाले की प्रकृति टेढ़ी हो तो उस टेढ़ी प्रकृति के साथ सिरफोड़ी नहीं करनी चाहिए। प्रकृति से ही यदि वह चोर हो, हम दस साल से उसकी चोरी देख रहे हों और वह आकर हमारे पैर छू जाए तो हमें क्या उस पर विश्वास रखना चाहिए? विश्वास नहीं रखना चाहिए। [४] चोरी करे उसे हम माफ़ी दे दें कि 'तू जा अब तू छूट गया। हमें तुम्हारे लिए मन में कुछ नहीं रहेगा।' लेकिन उस पर विश्वास नहीं रख सकते और उसका फिर संग भी नहीं रखना चाहिए। फिर भी [५] संग रखा और फिर विश्वास नहीं रखो तो वह भी गुनाह है। वास्तव में [६] संग रखना नहीं चाहिए और रखो तो उसके लिए पूर्वग्रह रहना ही नहीं चाहिए। [७] 'जो होगा वह सही' ऐसे रखना।

यह तो बहुत सूक्ष्म 'साइन्स' (विज्ञान) है। अभी तक ऐसा 'साइन्स' प्रकट नहीं हुआ है। हर एक बात एकदम नयी डिज़ाईन में है और ऊपर से सारे 'वर्ल्ड' को काम आए ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : इससे पूरा व्यवहार सुधर जाता है?

दादाश्री : हाँ, व्यवहार सुधर जाता है और लोगों का 'मोक्षमार्ग' सरल हो जाता है। व्यवहार सुधारना, उसका नाम ही सरल मोक्षमार्ग। यह तो मोक्षमार्ग लेने जाने में व्यवहार बिगाड़ते रहते हैं और दिन-ब-दिन व्यवहार उलझा डाला है।

हिसाबी है जगत् यह

प्रश्नकर्ता : हम अच्छा काम तन, मन और धन से करते हों, लेकिन कोई हमारा बुरा ही बोले, अपमान करे तो उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आत्मज्ञान हो तो अपमान का हर्ज नहीं होता। लेकिन ज्ञान नहीं हो तो [१] भीतर से कहना चाहिए कि 'खुद की पहले की भूल होगी। हमारी खुद की ही भूल होगी इसलिए सामनेवाला अपमान करता है। मेरा कुछ पहले का हिसाब होगा इसलिए वापस दे रहा है, इसलिए अपना जमा कर लो।' इस [२] अपमान करनेवाले को कहें कि, 'भाई, तू फिर से अपमान कर तो?' तब वह कहेगा, 'मैं कोई बेकार हूँ?' [३] यह तो जो उधार किया है, वही जमा करवा जाता है।

[४] जो अपमान करता है वह भयंकर पाप बाँध रहा है। अब [५] इसमें हमारा कर्म धुल जाता है और [६] अपमान करनेवाला तो निमित्त बना।

[७] कोई गाली देता हो तो आपको गाली देनेवाले का दोष नहीं दिखे। आपका ज्ञान ऐसा हो कि गाली दे फिर भी उसका दोष नहीं दिखे और [८] मेरे ही कर्म के उदय का दोष है वैसा भान रहे। इसे ही भगवान ने धर्मध्यान कहा है।

अहंकार का रस खींच लेने दें

सभीको अपमान पसंद नहीं आता। लेकिन हम कहते हैं कि, [१] वह तो बहुत हेल्पिंग है। मान-अपमान वह तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। [२] अपमान करता है वह तो आपका कड़वा रस खींचने आया कहलाता है। 'आप बगैर अक़्ल के हो'

ऐसा कहा मतलब वह रस सामनेवाले ने खींच लिया। ३ जितना रस खींच गया उतना अहंकार टूटा और वह भी बिना मेहनत के दूसरे ने खींच दिया। अहंकार तो रसवाला है। जब अनजाने में कोई निकाले तब जलन होती है। इसलिए जान-बूझकर आसानी से अहंकार कटने देना चाहिए। ४ सामनेवाला आसानी से रस खींच देता हो तो उसके जैसा ओर क्या हो सकता है? ५ सामनेवाले ने कितनी बड़ी हेल्प की कहलाता है।

मान-अपमान का खाता

१ 'जब अपमान का भय नहीं रहेगा तब कोई अपमान नहीं करेगा।' ऐसा नियम ही है। जब तक भय है तब तक व्यापार है। भय चला गया यानी व्यापार बंद। आपके खाते में मान-अपमान का खाता रखो। २ जो-जो कोई मान-अपमान दे उसे खाते में जमा कर दो, उधार मत रखना (देना)। चाहे जितना बड़ा या छोटा कड़वा डोज़ कोई दे, वह खाते में जमा कर लो। ३ तय करो कि महीने में सौ जितने अपमान जमा करने हैं। ४ वे जितने ज़्यादा आएँगे, उतना ज़्यादा मुनाफ़ा। और सौ के बजाय सत्तर मिलें तो तीस नुकसान में। फिर दूसरे महीने एक सौ तीस जमा करने हैं। ५ यदि तीन सौ अपमान जिसके खाते में जमा हो गए, उसे फिर अपमान का भय नहीं रहता। वह फिर तैरकर पार उतर जाता है। पहली तारीख़ से ही खाता शुरु कर देना है। इतना होगा या नहीं होगा?

प्रतिक्रमण की गहनता

प्रश्नकर्ता : इसमें किसी वक्त हमें दुःख लग जाता है कि मैं इतना सब करता हूँ, फिर भी यह मेरा अपमान करता है?

दादाश्री : हमें उसका प्रतिक्रमण करना पड़ता है। १ यह तो व्यवहार है। २ इसमें सब तरह के लोग हैं। वे मोक्ष में नहीं जाने देंगे।

प्रश्नकर्ता : वह प्रतिक्रमण हमें किस बात का करना है?

दादाश्री : प्रतिक्रमण इसलिए करना है कि ३ इसमें मेरे कर्म का उदय था और आपको ऐसा कर्म बाँधना पड़ा। उसका प्रतिक्रमण करता हूँ और ४ वापस ऐसा नहीं करूँगा कि जिससे किसीको मेरे निमित्त से कर्म बाँधना पड़े।

जगत् किसीको मोक्ष में जाने दे ऐसा नहीं है। सब तरह से आंकड़े यों खींच ही लाते हैं। इसलिए हम प्रतिक्रमण करें तो आंकड़े छूट जाते हैं। इसलिए महावीर भगवान ने आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, ये तीन वस्तुएँ एक ही शब्द में दी है। दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। अब खुद प्रतिक्रमण कब कर सकता है? खुद को जागृति हो तब, ज्ञानी पुरुष के पास ज्ञान प्राप्त हो, तब वह जागृति उत्पन्न होती है।

५ हमें तो प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए, ताकि हम जिम्मेदारी से छूट जाएँ।

मुझे शुरू-शुरू में सब लोग 'अटेक' करते थे न? लेकिन बाद में सब थक गए! ६ हमारा यदि सामने हमला हो तो सामनेवाले नहीं थकते!

७ यह जगत् किसीको भी मोक्ष में जाने दे ऐसा नहीं है। ऐसा सब बुद्धिवाला जगत् है। इसमें से सावधान रहकर चले, सिमटकर चले तो मोक्ष में जाते हैं!

शुद्धिकरण, दोषों का प्रतिक्रमण से

१ 'चंदूभाई' को 'आपको' इतना ही कहना पड़ें कि प्रतिक्रमण करते रहो। आपके घर के सभी व्यक्तिओं के साथ आपको, 'मुझसे कुछ भी पहले मनदुःख हुआ हो, इस भव, संख्यात या असंख्यात भव में जो-जो राग-द्वेष, विषय-कषाय से दोष किए हों तो उसकी क्षमा माँगता हूँ।' ऐसे रोज़ एक-एक घंटा निकालना चाहिए। २ घर के सभी व्यक्ति के,

इर्द-गिर्द सर्कल के सभी को लेकर, उपयोग रखकर प्रतिक्रमण करते रहना चाहिए। वह करने के बाद ये सभी बोझ हल्के हो जाएँगे। बाकी यों ही हल्के हो सकते नहीं। [३] हमने पूरे जगत् के साथ इस तरह निवारण किया था, तभी तो यह छुटकारा हुआ।

[४] जब तक सामनेवाले का दोष अपने मन में है, तब तक चैन से रहने नहीं देते। यह प्रतिक्रमण करो, तब वह मिट जाता है। [५] राग-द्वेषवाली हर एक चीकनी 'फाइल' में उपयोग रखकर प्रतिक्रमण करके चोखा करना चाहिए। राग की फाइल हो उसके तो प्रतिक्रमण अवश्य करने चाहिए।

करो याद-फरियाद के प्रतिक्रमण

'इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।' ऐसा आपने तय किया है न? फिर भी क्यों याद आती है?

[१] अभी भी किसी जगह पर लगाव है, वह भी 'रिलेटिव' लगाव कहलाता है, 'रियल' नहीं कहलाता। [२] जो याद आया उसका बैठे-बैठे 'प्रतिक्रमण' करना है, और कुछ भी नहीं करना है।

प्रतिक्रमण करते हुए [३] वापस फिर याद आए तब हमें जानना चाहिए कि अभी यह फरियाद है! इसलिए वापस यह प्रतिक्रमण ही करना है। जिस रास्ते हम छूटे हैं, वे रास्ते आपको बता दिए हैं। अत्यंत आसान और सरल रास्ते हैं। वर्ना इस संसार से छूट नहीं सकते। यह तो भगवान महावीर छूटे, बाकी नहीं छूट सकते। भगवान तो महा-वीर कहलाते हैं! फिर भी उनके कितने ऊँचे और नीचे अवतार हुए थे।

ज्ञानी के कहे अनुसार चलोगे, तो सब राह पर आ जाएगा।

करारों से छूटो अब

आत्मज्ञान मिलने के बाद आपको तो तय करना है कि, 'मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है।' और पालन नहीं हो उसकी चिंता नहीं करनी है। आपको दृढ़ निश्चय करना है कि मेरी सास डाँटती है, तो उनके साथ, दिखने से पहले ही मन में तय करना है कि, [१] 'मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना है और इनके साथ समभाव से निकाल करना ही है।' फिर समभाव से निकाल नहीं हो, तो आप जिम्मेदार नहीं है। आप आज्ञा पालने के अधिकारी हो, [२] आप अपने निश्चय के अधिकारी हों, उसके परिणाम के अधिकारी आप नहीं हो। आपका निश्चय होना चाहिए कि मुझे आज्ञा पालनी ही है। फिर नहीं पाली जाए तो उसका खेद आपको करना नहीं है। लेकिन मैं आपको बताऊँ उसके अनुसार प्रतिक्रमण करना है। [३] अतिक्रमण किया इसलिए प्रतिक्रमण करो। इतना सरल, सीधा और सुगम मार्ग है उसे समझ लेना है।

प्रकृति करे टेढ़ा-पुरुष करे सीधा

[१] प्रकृति टेढ़ा करेगी, लेकिन तू अंदर सीधा करना। प्रकृति क्रोध करने लगे तब 'हमें' [२] 'चंदूभाई' से क्या कहना पड़ता है? 'चंदूभाई यह गलत हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए।' मतलब 'आपका' काम पूरा हो गया! [३] प्रकृति तो कल सबेरे उल्टी भी निकलेगी और सुल्टी भी निकलेगी। उसके साथ हमें लेना-देना नहीं है। [४] भगवान क्या कहते हैं कि, 'तू अपना बिगाड़ना मत।'

[५] मनुष्यों का स्वभाव कैसा होता है कि जैसी प्रकृति वैसा खुद हो जाता है। जब प्रकृति सुधरती नहीं है तब कहेगा, 'छोड़ो पीछा!' अरे, [६] नहीं सुधरे तो कोई हर्ज नहीं है, तू अपना अंदर सुधार न! फिर हमारी 'रिस्पोन्सिबिलिटि' (ज़िम्मेदारी) नहीं है! इतनी हद तक यह 'साइन्स' है!!! बाहर चाहे जो हो उसकी 'रिस्पोन्सिबिलिटि' ही नहीं है। इतना समझे तो हल निकल आए।

प्रकृति का पृथक्करण

प्रश्नकर्ता : प्रकृति का 'एनालिसिस' (पृथक्करण) किस तरह करना चाहिए, वह समझाइए।

दादाश्री : [१] सुबह उठते हैं तब से भीतर चाय की आवाज़ आती है या किसकी आवाज़ आती है, ऐसा पता नहीं चलता? वह प्रकृति है। फिर दूसरा क्या माँगती है? तब कहे कि, 'ज़रा-सा नाश्ता, चिवड़ा या कुछ लाना।' वह भी पता चलता है न? ऐसा सारे दिन [२] प्रकृति को देखो तो प्रकृति का 'एनालिसिस' हो जाता है। [३] उससे दूर रहकर सब देखना चाहिए! [४] यह सब अपनी मरज़ी से कोई नहीं करता है, प्रकृति करवाती है।

प्रश्नकर्ता : यह तो स्थूल हुआ। लेकिन अंदर जो चलता हो उसे किस तरह देखना चाहिए?

दादाश्री : [५] वह इच्छा किसे हुई, वह हमें देख लेना चाहिए। यह इच्छा मेरी है या प्रकृति की है, वह हमें देख लेना चाहिए। [६] क्योंकि भीतर दो ही वस्तुएँ हैं।

प्रश्नकर्ता : अलग रहकर 'देखना' उस तरह की प्रेक्टिस करनी पड़ती है?

दादाश्री : एक ही दिन करे तो यह सब आ ही जाता है फिर। यह सब एक ही दिन करने की ज़रूरत है। दूसरे सब दिन वही का वही पुनरावर्तन है।

[७] इसलिए हम एक रविवार के दिन लगाम छोड़ देने का प्रयोग करने को कहते हैं। उससे हमारे मन में ऐसा होता है कि, 'हमने यह लगाम पकड़ी है, तो ही यह चलता है।' वह निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : लगाम पकड़ी है ऐसा कहा, यानी वह अहंकार हुआ न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह तो सारा डिस्चार्ज अहंकार है। अहंकार को हमें जान लेना चाहिए और [८] वह भी जानना चाहिए कि यह किस आधार पर चलता है? फिर भी अभी वापस उसका भाव उल्टा रहता है कि मेरी वजह से चलता है! इसलिए ऐसा प्रयोग करें न, तो वह सब बाहर निकल जाता है!

यह तो बेटा हम से कहे, 'मैं तेरा बाप हूँ।' तो उस घड़ी हमें ऐसा होता है कि, 'वही बोलता है।' तो हमें गुस्सा आता है और बेटा कब 'क्या बोलेगा?' वह कहा नहीं जा सकता। यानी [९] वाणी रिकार्ड है, इसलिए बोलनेवाले की अपनी शक्ति नहीं है। हमारी भी शक्ति नहीं है। [१०] यह तो पराई वस्तु फेंकी जा रही है, ऐसी जागृति रहनी चाहिए।

इस प्रकार आगे बढ़ते-बढ़ते तो [११] किसी 'नगीनभाई' की मैं बात करूँ, तो उस घड़ी मुझे वह 'शुद्धात्मा' है, ऐसा भीतर ख्याल रहना ही चाहिए। कोई पुस्तक पढ़ते हो तब उसमें 'मंगलादेवी ने ऐसा किया और मंगलादेवी ने वैसा किया', तब उस समय मंगलादेवी का आत्मा दिखाई देना चाहिए।

इस प्रकार जितना हो सके उतना करना चाहिए। ऐसा नहीं है कि आज ही आज पूरा कर देना है। इसमें 'क्लास' नहीं लाना है। लेकिन 'पोसिबल' करना ही चाहिए। धीरे-धीरे सबके साथ शुद्ध प्रेम स्वरूप होना है।

प्रश्नकर्ता : शुद्ध प्रेम स्वरूप यानी किस तरह रहना चाहिए?

दादाश्री : [१२] कोई मनुष्य अभी गाली देकर गया है और फिर आपके पास आया तो भी आपका प्रेम जाए नहीं, उसका नाम शुद्ध प्रेम। फूल चढ़ाए फिर भी बढ़े नहीं। बढ़े-घटे वह सब आसक्ति है। जब कि बढ़े नहीं, घटे नहीं, उसका नाम शुद्ध प्रेम है।

तत्वदृष्टि से जग दिखे निर्दोष सदा

पुद्गल को मत देखना, [१] पुद्गल की तरफ दृष्टि मत करना। आत्मा तरफ़ ही दृष्टि करना। कान

दादावाणी

में कीलें मारनेवाले भी भगवान महावीर को निर्दोष दिखाई दिए। [२] दोषित दिखते हैं वही हमारी भूल है। वह एक प्रकार का हमारा अहंकार है। यह तो हम बगैर पगार के काज़ी बनते हैं और फिर मार खाते हैं। [३] मोक्ष में जाते हुए ये लोग हमें उलझाते हैं, ऐसा जो बोलते हैं, वह तो व्यवहार से हम बोलते हैं। इस इन्द्रियज्ञान से जो दिखता है, वैसा बोलते हैं। लेकिन [४] वास्तव में, हक़ीक़त में तो लोग उलझा ही नहीं सकते न! क्योंकि [५] कोई जीव किसी जीव में किंचित् मात्र दख़ल कर ही नहीं सकता ऐसा यह जगत् है। [६] ये लोग तो बेचारे प्रकृति जैसे नाच करवाए उसके अनुसार नाचते हैं, इसलिए उसमें किसीका दोष है ही नहीं। [७] जगत् सारा निर्दोष है। मुझे खुद को निर्दोष अनुभव में आता है। आपको वह निर्दोष अनुभव में आएगा तब आप इस जगत् से छूट गए। वर्ना कोई एक भी जीव दोषित लगेगा तब तक आप छूटे नहीं हो।

पूरा साइन्स ही समझने जैसा है। वीतरागों का विज्ञान बहुत गुह्य है। ''यह तो बहुत-बहुत सूक्ष्म 'साइन्स' है। अभी तक ऐसा 'साइन्स' प्रकट नहीं हुआ है। हर एक बात एकदम नयी डिज़ाइन में है और फिर सारे 'वर्ल्ड' को काम आए ऐसा है।''

जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
✦ **'दूरदर्शन - डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
USA ✦ **'TV Asia'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
Africa ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ सुबह १०-३० से ११ (गुजराती में)
✦ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत ✦ **'झी जागरण'** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
✦ **'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
U.S.A. ✦ **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
UK-Europe ✦ **'MA TV' Everyday 5 to 5-30 PM** (गुजराती में)
USA-UK ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)
Africa ✦ **'Aastha International'** पर हर रोज़ रात १२ से १२-३० (गुजराती में)

कृपया नोट करें : संस्कार तथा डीडी-मराठी (सह्याद्रि) चैनल पर सत्संग कार्यक्रम बंद हो चूका है।

२५ जुलाई को विभिन्न शहरों में आयोजित स्थानिक गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

भोपाल **समय : दोपहर ३ से ६** **संपर्क :** 9425024405, 9977004160
स्थल: जनकविहार कोम्प्लेक्स, रेनबक्सी लेब के पास, एरटेल ओफिस के सामने, मालवियानगर, भोपाल.

बेंगलूर **समय : सुबह १० से शाम ५** **संपर्क :** 9590979099
स्थल: तुरखिया जैन भवन, 11th, 4th क्रोस, कोर्पोरेशन पार्क के सामने, गांधीनगर, बेंगलूर.

मुंबई **समय : शाम ४ से ८-३०** **संपर्क :** 9323528901
स्थल: भुराभाई आरोग्य धाम, शांतिलाल मोदी रोड, कांदिवली (वेस्ट), मुंबई.

पूज्य नीरूमाँ के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अमरावती **दिनांक : २० जुलाई** **समय : दोपहर ३ से ७**

स्थल: दोशी वाडी, बीग (अलंकार) सिनेमा के पास, मोरशी रोड, अमरावती (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 9823127601

ग्वालियर **दिनांक : २१ जुलाई** **समय : शाम ५-३० से ८**

स्थल: मानस भवन, फुलबाग, ग्वालियर (मध्य प्रदेश). **संपर्क :** 9893758190

भिलाई **दिनांक : २१ जुलाई** **समय : शाम ६-३० से ९**

स्थल: दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोड़ा वॉटर टेंक के पास, भिलाई (छत्तीसगढ). **संपर्क :** 9827481336

रायपुर **दिनांक : २२ जुलाई** **समय : शाम ५ से ७**

स्थल: महंत घासीदास म्युझियम ऑडिटोरियम, राज भवन के पास, रायपुर, (छत्तीसगढ). **संपर्क :** 9425245616

इन्दौर **दिनांक : २२ जुलाई** **समय : शाम ६ से ८-३०**

स्थल: चोकसे धर्मशाला, सुभाषनगर चौराहा, परदेशीपुरा, इन्दौर (मध्य प्रदेश). **संपर्क :** 9893545351

कोलकता **दिनांक : २४ जुलाई** **समय : शाम ५-३० से ८**

स्थल: इन्द्रप्रस्थ, ४६/ए, चक्रबेरिया नोर्थ, भवानीपुर, कोलकता-25. **संपर्क :** 033-32933885, 9330333885

दिनांक : २५ जुलाई **समय : सुबह ९-३० से शाम ४**

स्थल: लक्ष्मीनारायण मंदिर, ४२, शरद बोस रोड, पड्डापुकुर के पास, कोलकता-20. **संपर्क :** 033-32933885

पटना **दिनांक : २६ जुलाई,** **समय : सुबह ९-३० से ५** **संपर्क :** 9431015601

स्थल : जैन श्वेतांबर तेरापंथ सेवा ओशवाल भवन, चौथा तल्ला, नारायण प्लाजा, एक्जिबिशन रोड़, पटना (बिहार).

हैद्राबाद **दिनांक : २७-२८ जुलाई** **समय : शाम ७ से ९**

स्थल: कच्छी भवन, रामकोट, ईडन बाग, हैद्राबाद. **संपर्क :** 9989877786

बेंगलूर **दिनांक : २९ जुलाई** **समय : शाम ५ से ७**

स्थल:श्री जलाराम भुवन, 29/28 2nd मेईन रोड, इन्डस्ट्रीयल टाउन, राजाजीनगर. **संपर्क :** 9590979099

दिनांक : २ अगस्त, **समय : शाम ६ से ८**

स्थल :श्री संभवनाथ जैन भुवन, 101, सज्जनराव सर्कल के पास, महावीर जैन कॉलेज के सामने, वी.वी. पुरम, बेंगलूर.

कोईम्बतुर **दिनांक : ३० जुलाई** **समय : शाम ६ से ८**

स्थल:श्री कोईम्बतुर गुजराती समाज, 500, मेटुपालीयम रोड, आर.एस. पुरम, कोईम्बतुर. **संपर्क :** 9443143997

चेन्नई **दिनांक : ३१ जुलाई** **समय : रात ८ से १०**

दिनांक : १ अगस्त **समय : शाम ५ से ७**

स्थल: श्री कच्छी मिलन, पुरुषवाकम् हाई रोड, अभिरामी के पास, प्रिन्स टावर के सामने. **संपर्क :** 9380159957

होस्पेट **दिनांक : ३ अगस्त** **समय-स्थल की जानकारी के लिए संपर्क:**9590979099

हुबली **दिनांक : ४ अगस्त,** **समय : शाम ७-३० से ९-३०**

स्थल : एन. के. सभागृह, केशवापुर, हुबली. **संपर्क :** 9343401229

दादावाणी

परम पूजनीय दादा भगवान के हिन्दी सत्संग केन्द्रो के बारे में जानकारी

दिल्ही

हर रविवार **समय : शाम ५ से ७** **संपर्क :** 9310022350
स्थल: लौरेल हाइस्कूल, सरस्वती विहार, सी-ब्लॉक, अग्रसेन भवन के पास, शिवा मार्केट के सामने, नई दिल्ही.

जयपुर

हर रविवार **समय : शाम ४-३० से ७** **संपर्क:**(0141)2236760, 9529244211
स्थल: ५०७, रिद्धि-सिद्धि टावर, सेकटर नं. ५, एस. के. सोनी अस्पताल के पास, विद्याधरनगर, जयपुर.

भोपाल

हर रविवार **समय : शाम ५ से ७** **संपर्क :** 9425024405, 9977004160
स्थल: जनकविहार कोम्प्लेक्स, रेनबक्सी लेब के पास, एरटेल ओफिस के सामने, मालवियानगर, भोपाल.

इन्दौर

हर रविवार **समय : शाम ५ से ७**
स्थल: हम्पी-डम्पी स्कूल, ७३, नारायण बाग, इन्दौर. **संपर्क :** 9893545351

पटना

हर दूसरे और चौथे रविवार **समय : शाम ३ से ६**
स्थल: जैन भवन, गोविंद मित्रा रोड, पटना-4. **संपर्क :** 9431015601

कोलकता

हर रविवार **समय : शाम ६ से ८** **तथा** **केवल बहनों के लिए मंगल-गुरु, शाम ४ से ६**
स्थल: शशीकांत कामदार, १९/बी, हरीश मुखर्जी रोड, कोलकता-25. **संपर्क :** 033-32933885

अमरावती

हर शनिवार **समय : शाम ६-३० से ८-३०**
स्थल: विकास महेता, बी-3, बसेरा अपार्टमेन्ट, शीलांगन रोड, रविनगर चौक, अमरावती. **संपर्क :** 9823127601
हर रविवार **समय : शाम ६-३० से ८-३०**
स्थल: पंकड वसाडकर, शारदानगर, अमरावती. **संपर्क :** 0721-2566457

भिलाई

हर रविवार **समय : सुबह ९-३० से ११-३०**
स्थल: दादा भगवान फाउन्डेशन सत्संग सेन्टर, मरोड़ा वॉटर टेंक के पास, भिलाई. **संपर्क :** 9827481336

रायपुर

हर रविवार **समय : सुबह ९-३० से ११**
स्थल: माता सुंदरी खालसा हाइस्कूल, पण्डरी, रायपुर. **संपर्क :** 9425245616

हैद्राबाद

हर रविवार **समय : सुबह १० से १२**
स्थल: ३०१, अरिहंत, गुलमोहर, ३-६-४३३, हिमायतनगर, हैद्राबाद. **संपर्क :** 9989877786, 040-27636328

बेंगलूर

हर रविवार **समय : शाम ४ से ६**
स्थल: डी.वी.वी. गुजराती स्कूल, मेजेस्टिक सर्कल, गांधीनगर, बेंगलूर. **संपर्क :**9590979099, 9342530176

चेन्नाई

हर रविवार **समय : शाम ४ से ६ तथा केवल बहनों के लिए मंगल व गुरु, दोपहर ३ से ५-३०**
स्थल: जवाहर वोरा, बी-7, फर्स्ट फ्लोर, केन्ट अपार्टमेन्ट, 26, रिथर्डन रोड, चेन्नाई-7. संपर्क : 9380159957

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

Dada Gurupurnima 2010 in UK

Date	Day	Time	Event	Venue
29th July	Thursday	7:30 to 10 PM	Spiritual Discourse	Wanza Community Centre,
30th July	Friday	7:30 to 10 PM	Spiritual Discourse	31, Pasture Lane,
31st July	Saturday	6 to 10 PM	Gnanvidhi	**Leicester**, LE1 4EY
1st August	Sunday	9 AM to 8 PM	**Gurupurnima**	**Contact** : 01162208081

पूज्य दिपकभाई विदेश प्रवास के बाद दि. ३ अगस्त को मुंबई और दि. ४ अगस्त को अडालज पधारेंगे।

दिल्ही *(हिन्दी में सत्संग व ज्ञानविधि)*

२०-२१ अगस्त (शुक्र, शनि), शाम ६-३० से ९ - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**

२२ अगस्त (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**

स्थल : शाह ओडिटोरियम, दिल्ही गुजराती समाज मार्ग, सिविल लाईन, दिल्ही-५४. **संपर्क :** 9310022350

सूचना : दिल्ही के अलावा बाहर से आने वाले सभी महात्मा-मुमुक्षुओं जो ठहरने की सुविधा चाहते है, उनसे निवेदन है कि कृपया 9654238722, 011-25457768 में किसी भी नंबर पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ।

बेंगलूर *(हिन्दी में सत्संग व ज्ञानविधि)*

२७-२८ अगस्त (शुक्र, शनि), शाम ६ से ८-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**

२९ अगस्त (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलूर-२. **संपर्क :** 9590979099

त्रिमंदिर अडालज

१४ अगस्त (शनि)- **सत्संग** - शाम ४-३० से ७

१५ अगस्त (रवि)- **ज्ञानविधि** - दोपहर ३-३० से ७

२४ अगस्त - रक्षाबंधन के अवसर पर भक्ति-दर्शन - सुबह ९ से ११

२ सितम्बर - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति - रात १० से १२

विशेष सूचना : परम पूज्य दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा हरेक सत्संग सेन्टर में रविवार 25 जुलाई को महात्माओं की उपस्थिति में मनाई जाएगी। हर साल पूज्य दिपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में गुरूपूर्णिमा कार्यक्रम आयोजित होता है, वह कार्यक्रम इस साल आयोजित नहीं किया गया है। दर्शन का कार्यक्रम पर्युषण पर्व के बाद रखा गया है।

दि. ४ से ११ सितम्बर - पर्युषण पर्व

पर्युषण के दौरान 'प्रतिक्रमण' गुजराती ग्रंथ के शेष रहे पृष्ठों पर वाचन और उस पर सत्संग-पारायण (शिविर) होगा।

१२ सितम्बर (रविवार) के दिन दर्शन का विशेष कार्यक्रम रहेगा।

सूचना : १) बाहर से आनेवाले सभी महात्मा-मुमुक्षुओं से निवेदन है कि रहने-खाने की सुचारु व्यवस्था हो सके, इसलिए अपने नज़दीकी सत्संग सेन्टर में अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ और यदि नज़दीक में सत्संग सेन्टर न हो, वे १५ अगस्त २०१० तक त्रिमंदिर अडालज (079-39830400) पर फोन द्वारा कार्यक्रम के कम से कम १५ दिन पहले अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवा लें। ओढ़ने एवं बिछाने का चद्दर साथ लेकर आएँ।

गुजरात में विभिन्न शहरों में सत्संग और ज्ञानविधि
Spiritual discourses and Gnan Vidhi at different cities in Gujarat

आणंद
18–19 मई
Anand
18-19 May

आप्तसिंचन में प्रवेश कर रहे
नए साधक...
New Sadhaks Joining
Aptasinchan...

वडोदरा
21 से 23 मई
Vadodara
21 to 23 May

गोधरा
24 से 26 मई
Godhra
24 to 26 May

अडालज त्रिमंदिर में... At Adalaj Tri-Mandir

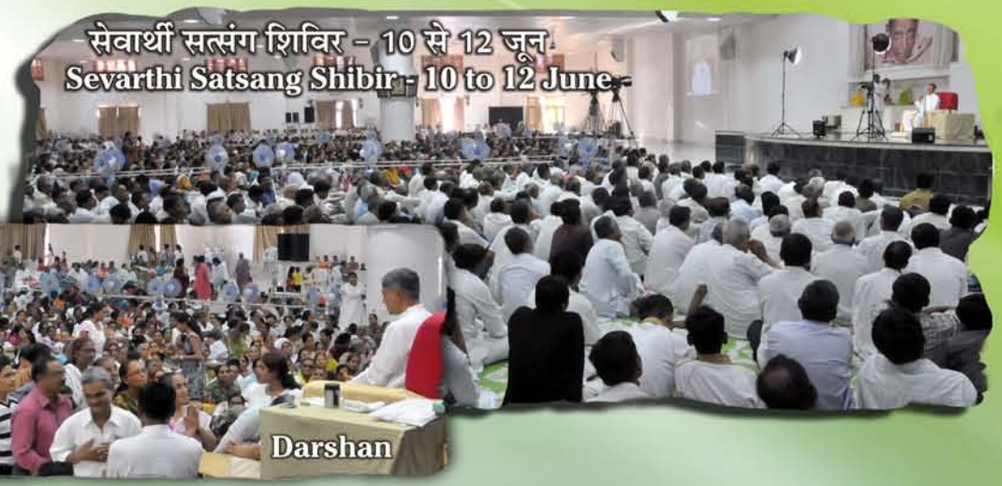

जुलाई २०१०
वर्ष - ५, अंक - ९
अखंड क्रमांक - ५७

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

ज्ञानी की तत्त्वदृष्टि

इस दुनिया को मैं ने हर तरह से देखा है, बहुत सारे पहलू से देखा है। हमें इस जगत् में कोई दोषी दिखता ही नहीं। जेबकतरा हो या चारित्रहीन हो, उसे भी हम निर्दोष ही देखते हैं। हम तो केवल सत् वस्तु (आत्मा) को ही देखते हैं। वही तात्त्विक दृष्टि है। इस पेकिंग (देह) को हम नहीं देखते। वेराइटिज़ ऑफ पेकिंग है, उनमें हम तत्त्वदृष्टि से देखते हैं। हमने संपूर्ण निर्दोष दृष्टि की और सारे जगत् को निर्दोष देखा। इसलिए ही ज्ञानी पुरुष आपकी भूल को खतम कर सकते हैं।

- दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chembers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964,27540216